मई 2005
Rs. 12 /-
चन्दामामा
इस अंक में
देखिए जी-मैन के
कारनामे
G-man

JUNIOR CHANDAMAMA
is 2 years old this month
Here's a special ANNIVERSARY offer!
Pay only Rs. 120 (for 12 issues) and save Rs. 24
Go, grab the discount!
Offer closes on May 31, 2005
If you are a subscriber, you can avail of the concession for a GIFT Subscription
Junior
CHANDAMAMA
SUBSCRIPTION FOR JUNIOR CHANDAMAMA
☐ Please enrol me as a new subscriber for Junior Chandamama in English
☐ I am a subscriber(Subscription No: ....); I would like to take out a GIFT Subscription.
My name / My friend's name : ....
Home address : ....
.... PIN CODE : ....
I am enclosing DD / M.O. Receipt No. .... issued by ....
P. O. for Rs 120.00
Signature
ATTACH THIS LABEL ON THE FIRST COPY
This is a GIFT copy with love from ....
.... Town / City ....
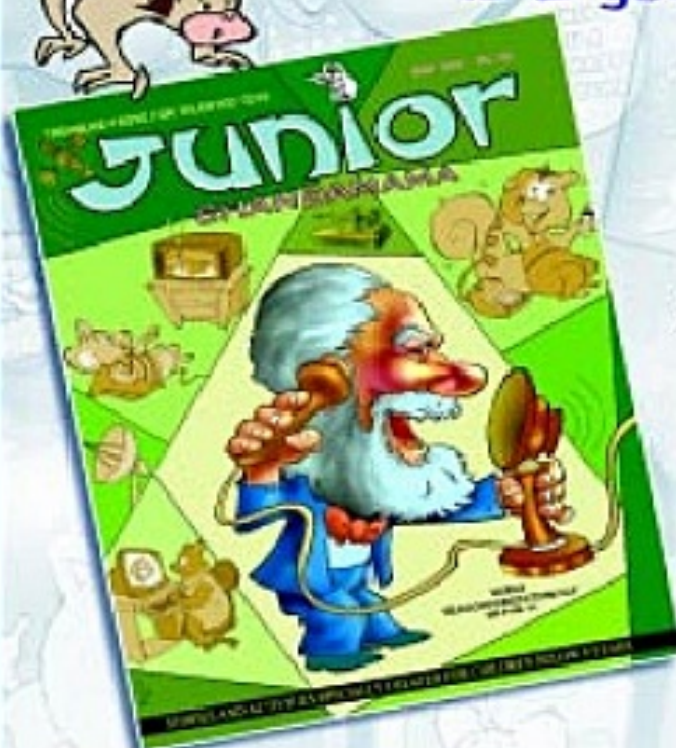
गुफाओं के बारे में

क्या तुम जानते हो कि गुफाएं क्या होती हैं?

वे धरती में प्राकृतिक रूप से निर्मित प्रायः इतने बड़े खोखले होते हैं जिनमें मनुष्य प्रवेश कर सके।

आयें, आन्ध्रप्रदेश में करनूल जिले की बेलम गुफाओं की यात्रा पर चलें। ये समतल भूमि पर स्थित भारत की सबसे लम्बी गुफा-प्रणाली है। यह तीन कि.मी. से अधिक लम्बी है जिसमें दो कि.मी. क्षेत्र तक आसानी से भ्रमण किया जा सकता है। एक ही स्थान पर कई गुफाओं को जोड़नेवाली शृंखला को गुफा-प्रणाली कहते हैं।

बेलम की गुफाओं में हैं - दीर्घ सर्पिल वीथियाँ जो अचानक ऐसे विशाल-विस्तृत कक्षों में खुलती हैं जहाँ ताजे जल की दीर्घाएँ और प्रणालियाँ हैं, छत से लटकते शानदार आरोही निक्षेप तथा गुफा की फर्श पर खड़े रहस्यमय निलम्बी निक्षेप हैं।

जब गुफा में कार्बन डॉयोक्साइड-मिश्रित जल पिघलता है अथवा चूना-पत्थर को द्रवीभूत करता है, तब गुफा की भीतरी छत से आर्द्रता टपकती है और अपने अन्दर के खनिज के साथ हिमवर्तिका जैसी नलियाँ बनाती हैं, जिन्हें आरोही निक्षेप कहते हैं। गुफा की फर्श पर पानी की बून्दें टपकने से छोटे टीले बन जाते हैं। ये निलम्बी निक्षेप कहलाते हैं।

आन्ध्र प्रदेश पर्यटन विकास निगम (ए पी टी डी सी) ने बेलम की गुफाओं को एक खूबसूरत दर्शनीय स्थल में परिणत कर दिया है। ए पी टी डी सी ने अन्दर के कीचड़ को साफ कर वीथियाँ बना दी हैं और विस्मयकारी दृश्य को देखने के लिए गुफा के अन्दर प्रकाश का प्रबन्ध कर दिया है। गुफा के अन्तरतम भागों में ताजी हवा की नियमित आपूर्ति के लिए वायु निकास की सुविधा बना दी गई है।

गुफा- प्रणाली का प्रथम कक्ष *सिंहद्वारम* कहलाता है। इसमें एक छोटा-सा सुन्दर सरोवर है, एक जलप्रपात और एक फव्वारा है। गुफा-प्रणाली का यह सबसे बड़ा कक्ष है और इसकी छत लगभग नौ मीटर ऊँची है।

दूसरा कक्ष, जिसे *मण्डपम* कहते हैं, जो आरोही निक्षेपों से सुसज्जित भूगर्भित हॉल है। यहाँ से *पाताल* गंगा नामक कक्ष के लिए एक मार्ग जाता है। यहाँ का मुख्य आकर्षण एक छोटा जलप्रपात है। कहीं-कहीं गुफा की छत २० मी. तक ऊँची है। छत के साथ-साथ घुमावदार खांचा है। इसके सौन्दर्य को बढ़ाने के लिए इसे ज्योतित कर दिया गया है। यहाँ से जानेवाली एक वर्तुल सीढ़ी आप को आरोही निक्षेपों से भरपूर एक कक्ष में ले जायेगी, जिसे *कोटिलिंगलु* अथवा लाखों लिंगों का कक्ष कहते हैं। ये विलक्षण आरोही निक्षेप उलटी हुई हिमालय की पर्वत शृंखलाओं के लघु रूप जैसे दिखाई पड़ते हैं। आप यहाँ आरोही निक्षेपों को एक आश्चर्यजनक चमक के साथ देख सकते हैं। ऐसा निक्षेपों में मौजूद खनिजों के कारण होता है जो प्रकाश को प्रतिबिम्बित करते हैं।
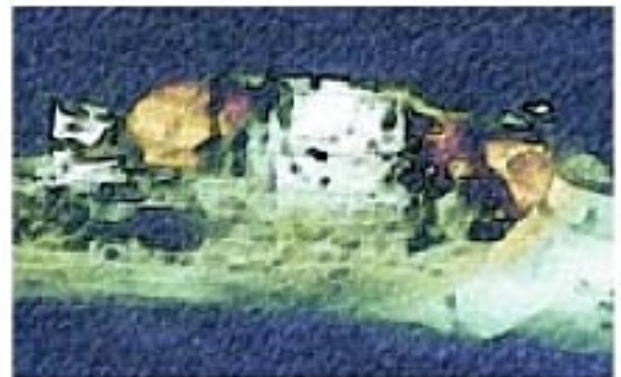
बेलम की गुफाएँ

खोजिये भूगर्भित चमत्कार

इन लाखों वर्ष पुरानी कन्दराओं की आधुनिक युग में पहली बार चर्चा एक ब्रिटिश भूगर्भ शास्त्री रावर्ट ब्रूस फूटे द्वारा सन् १८८४ में की गई। लगभग एक सदी के बाद सन् १९८२-८३ में कन्दरा शास्त्र के वैज्ञानिकों के एक दल ने, जिसका नेता जर्मनीवासी डेनियल गेबौर था, बेलम गुफाओं की पूरी तरह छानबीन की। कन्दरा शास्त्र, गुफाओं का वैज्ञानिक अध्ययन है। सन् १९९९ में ए पी टी डी सी ने इन गुफाओं को एक आकर्षक पर्यटन स्थल बनाने का दायित्व लिया। ए पी टी डी सी ने गुफाओं के सौन्दर्य में वृद्धि के लिए मद्धिम प्रकाश का भी आयोजन किया है।

बेलम गुफाओं के पर्यटन का निश्चय कर लीजिये। ये प्रकृति की भूगर्भित सौन्दर्य का अविस्मरणीय उदाहरण हैं। इन गुफाओं की शैक्षणिक सैर शिक्षाप्रद के साथ-साथ बड़ी मजेदार हो सकती है!

स्थितिः बेलम गाँव के निकट कर्नूल जिला में कोलिमिगुंडला मंडा। निकट के शहरों से बस सुविधा। कर्नूल से बनगनपल्ली होते हुए ११० कि.मी., ननदयाल से ६० कि.मी., टाडिपत्री से ३१ कि.मी., अनन्तपुर से ८४ कि.मी., बंगलोर से २७० कि.मी.। ए पी टी डी सी गुफाओं की यात्रा के लिए स्कूलों की शैक्षणिक सैर का आयोजन कर सकता है अथवा परामर्श दे सकता है।

aptdc ANDHRA PRADESH TOURISM DEVELOPMENT CORPORATION

For details please contact: Punnami Tourist Complex, Venkatramana Colony, **Kurnool**. Telefax:+91 (8518) 258922. Central Reservation Office: Shakar Bhavan, Opp. Police Control Room, Hyderabad. Phone: + 91 (40) 23298455, 23298457; Fax: + 91 (40) 23298456 Information & Reservation Offices: HYDERABAD: Tank Bund Road, Phone:040-23453036, 23450165, Fax:23453086 • SGM Mall, Mehdipatnam Circle, Ph: 040-23525794, 23525796 • Surya Complex, KPHB Colony, Ph: 040-23052028, 23052038. SECUNDERABAD: Yatrinivas, S.P. Road, Ph: 040-27893100, 27816375 BANGALORE: 341, Race Course Road, Ph:080-51136373 Fax: 22385813 Divisional Offices: VISAKHAPATNAM: Srinath Complex, Dwaraka Nagar, Phone: +91 (891) 5564456 Fax: (891) 2559090 VIJAYAWADA: Opp. P.W.D. Grounds, M.G. Road, Phone: +91 (866) 2570781 Fax: (866) 2571600 TIRUPATI: 139, T.P. Area, 3rd Choultry, Phone: +91 (877) 2256386 Fax: (877) 2252062

चन्दामामा सम्पुट - १०८ मई २००५ सञ्चिका - ५

अंतरंग

विशेष आकर्षण

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20

Remittances in favour of Chandmama India Ltd.
to
Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal,
Chennai - 600 097
E-mail :
subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा बारह अंक ९०० रुपये।
भारत में बुक पोस्ट द्वारा बारह अंक १४४ रुपये।
अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या मनी-ऑर्डर द्वारा
'चंदामामा इंडिया लिमिटेड' के नाम भेजें।

संस्थापक
बी. नागिरेड्डी और चक्रपाणि

गाँधीजी का स्मरण

पचहत्तर वर्ष पूर्व भारत में एक महान घटना घटित हुई जिसने हमारे स्वाधीनता संग्राम में एक मोड़ ला दिया। गाँधी जी ने ६ अप्रैल १९३० को गुजरात के समुद्री तट पर घातक नमक कानून को भंग कर दिया। यह साबरमती के उनके आश्रम से ३८० कि.मी. तक पैदल यात्रा के बाद घटित हुआ। देश ने हाल में डांडी मार्च का पुनराभिनय किया जिससे विश्व उन्हें और अपनी मातृभूमि को स्वाधीन बनाने के लिए किये गये उनके बलिदानों को याद रख सके।

गुजरात से डांडी यात्रा की ७५वीं वर्षगाँठ आरम्भ होने से एक दिन पूर्व एक टी.बी.क्रू ने आम लोगों से बातचीत की। गाँधीजी के प्रति खासकर युवा पीढ़ी की उदासीनता को देखकर दुख हुआ। "क्या २१वीं शताब्दी में अहिंसा का पालन करना सम्भव है?" उन्होंने प्रश्न किया।

गाँधीजी के स्वर्गवास हुए ६० साल से कुछ कम ही समय हुआ है। इतने अल्पकाल में क्या राष्ट्र उन्हें भूल गया? यदि हमें एक सुदृढ़ राष्ट्र का निर्माण करना है, तो हमें सबसे पहले उनका आदर करना सीखना चाहिये जिन्होंने राष्ट्र के लिए अपने जीवन समर्पित कर दिये। इस सम्बन्ध में अध्यापकों की भूमिका बड़ी अहम है जिन्हें भावी पीढ़ी में राष्ट्रीय गौरव की भावना को भरने की स्थिति और अवसर दोनों उपलब्ध हैं। साथ ही मीडिया का भी दायित्व कम नहीं है जिन्हें राष्ट्रीय चरित्र के निर्माण में रचनात्मक भूमिका निभानी चाहिये।

हमारी परम्पराओं के निर्माताओं तथा स्वाधीनता संग्राम में स्वेच्छापूर्वक अपने जीवन अर्पित करनेवाले शहीदों के योगदान को भूलना नहीं चाहिये। उनमें से प्रत्येक को हमें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करनी चाहिये।

सम्पादक:विश्वम

सत्य अग्नि समान है

रात का भोजन कर चुकने के बाद जब बच्चें आये, तब दादी सावित्री कोई किताब पढ़ रही थी। तब दस साल की उम्र के राम ने दादी से कहा, ''कल हमारे चाचा अपने दोस्त से बात कर रहे थे 'कृष्ण अपने को बहुत अक्लमंद समझता है। और सबको बेवकूफ बनाने की चालें चलता रहता है। पर सत्य तो अग्नि समान है। अच्छा हुआ, उसे सजा मिली' यों उन्हें यह कहते हुए मैंने सुना। दादी, सत्य अग्नि समान है का क्या मतलब हुआ?''

बड़े प्यार से उसे अपने पास लेते हुए दादी ने कहा, ''कुछ लोग छिप-छिपाकर बुरे काम करते हैं। पर किसी न किसी दिन वह राज़ खुल जाता है। तुम्हारे चाचा ने भी यही बात बतायी। शरत और कमल भी ऐसा ही करते थे। उनकी कहानी मुझसे सुनो।'' फिर दादी ने यों कहाः

एक बार गिरिपुर के ज़मींदार माधव के आस्थान में एक युवक आया और ज़मींदार से कहने लगा, ''मालिक, मेरा नाम विश्वनाथ है। मैं पढ़ा-लिखा हूँ, मुझे मेरी शिक्षा के योग्य कोई नौकरी दिलवायेंगे तो बड़ी कृपा होगी।''

ज़मींदार ने कहा, ''मेरे दिवान में शरत और कमल नामक दो लम्बे है। वे बड़े हैं, कर्मचारी अर्से से यहाँ काम कर रहे हैं। एक महीने तक उनके पास काम करना। उसके बाद तुम्हें नौकरी देने की वे सिफारिश करेंगे तो देखा जायेगा।''

विश्वनाथ अक्लमंद और वाक्पटु था। उसकी व्यवहार-शैली दोनों को अच्छी लगी। दोनों की एक-एक पुत्री थी। दोनों चाहते थे कि अपनी पुत्री का विवाह विश्वनाथ से करा दें।

मौक़ा पड़ते ही शरत विश्वनाथ से कहा करता था, ''तुम कमल का विश्वास मत करना। वह ग़लत हिसाब देकर ज़मींदार को चकमा देता रहता है। उसकी कमाई पाप की है।''

कमल भी विश्वनाथ से कहता रहता, ''शरत हर छोटी-सी बात पर ज़मींदार के सामने जाकर रोता रहता है और यह कहकर उनसे पर्याप्त मात्रा में धन ऐंठता है कि मेरी पत्नी सख्त बीमार है। ऐसे बुरे आदमी की बातें सुनकर अनसुनी कर देना। तुम्हारा नाम भी खराब हो जायेगा।''

उन दोनों की बातें सुनते हुए विश्वनाथ ऊब गया। उसने उनकी बातों की सचाई जानने का के लिए अपने दूर के रिश्तेदार पटवारी से मिलकर दोनों की बातें उसे सुनायीं।

पूरा सुन चुकने के बाद पटवारी ने कहा, ''दोनों के दोनों धोखेबाज़ हैं। श्रीराम नवमी उत्सव के अवसर पर ज़मींदार ने जो रक़म दी, उसमें से अधिकांश रक़म शरत ने हड़प ली। अब रही कमल की बात। ज़मींदार ने सराय चलाने के लिए जो रक़म दी उसमें से आधी से अधिक रक़म उसने अपनी जेब में डाल ली। पर ज़मींदार को उनपर अपार बिश्वास है। इसी बजह से हम उनसे असली विषय बता नहीं पा रहे हैं।''

बिश्वनाथ ज़मींदार से एकांत में मिला। बीस दिनों से वे दोनों बड़े अधिकारी जो काम कर रहे हैं, उनका ब्योरा दिया और कहा भी कि गांव का पटवारी और गांव के प्रमुख उन्हें नहीं चाहते और उनकी दृष्टि में वे दोनों बदमाश और धोखेबाज़ हैं। उसने ज़मीन्दार से यह भी कहा कि अगर आपकी अनुमति हो तो इन दोनों बड़ों की असलियत का फर्दाफाश करने वे दिवान में आने को तैयार हैं।

विश्वनाथ की बातें सुनकर ज़मींदार क्षण भर के लिए अवाक रह गया। फिर अपने को संभालकर कहा, ''पटवारी और गांव के प्रमुख को गवाही देने की कोई ज़रूरत नहीं। उनकी ईमानदारी से मैं परिचित हूँ। सत्य अग्नि समान है न। कब तक वे सच छिपा सकते हैं? इसी क्षण से मैं तुम्हें शरत और कमल सहित सब कर्मचारियों पर अधिकारी नियुक्त करता हूँ।''

दादी ने कहानी सुनाने के बाद कहा, ''हम बुरे काम चाहे कितना भी छिपायें, किसी न किसी दिन खुलेंगे। अतः अच्छे काम करने की ही आदत डालनी चाहिये। अब जान गये, सत्य अग्नि समान है का क्या मतलब है?''

बच्चों ने उत्साह के साथ सिर हिलाते हुए कहा ''दादी, जान गये।''

पाठकों के लिए कहानी प्रतियोगिता (अक्तूबर)

सर्वश्रेष्ठ विजेता प्रविष्टि

नहीं खिलाने में एक कमी, खिलाने में सौ :

''नहीं'', तब भी नहीं। शंकर ने कहा।

''क्यों'', राजा ने पूछा।

शंकर ने कहा, ''महाराज! अभी, मैंने सुना। जितनी देर वे बात कर रहे थे, किसी न किसी की पीठ पीछे बुराई कर रहे थे। अपनी बहिन को खुश करने के लिये उन्होंने महाराज की भी बुराई कर डाली। इस से मैंने अनुमान लगाया कि आपके साले महोदय को चुगलखोरी में मज़ा आता है और वे बिना कारण भी किसी की बुराई कर सकते हैं। शंकर ने रुककर फिर कहा, ''महाराज! अगर मैं इन्हें खाना बनाकर नहीं खिलाता हूँ तो वे सिर्फ एक ही बुराई कर पायेंगे कि - ''शंकर-शाही बावर्ची ने मुझे खाना खिलाने से इनकार कर दिया''- और संभव है खुद की बेइज्ज़ती समझते हुए यह एक शिकायत भी ना कर पायें। पर अगर इन्हें व्यंजन बनाकर खिलाऊँगा, तो पता नहीं हरेक व्यंजन में कितनी-कितनी मनगढंत कमियाँ निकालते फिरेंगे और यह दिखाने की कोशिश करेंगे कि शाही बावर्ची से कहीं ज्यादा अनुभवी बावर्ची ये खुद हैं।'' शंकर के मार्मिक तर्क से महाराज अति प्रसन्न हुए। महाराज ने अनुभव किया कि शंकर केवल वेतन पाने के लिये कार्य नहीं करता है - बल्कि आत्म संतुष्टि की अनुभूति के लिये भी कार्य करता है।

राजा ने उसे खाना बनाने के लिये मजबूर नहीं किया और चांदी के सौ सिक्के इनाम के रूप में दिये भी। बावर्ची ने एक अजीब सी शांति का अनुभव किया।

कृष्ण कुमार पाल,

S/O. जवाहर प्रसाद पाल, पाल कान -नाक-गला हॉस्पिटल

सिंघाना रोड, नारनौल, हरयाणा-१२३००१.

सास-बहू के झगड़े

पता नहीं, किस मुहूर्त पर असंघती ने ससुराल में क़दम रखा, उसके और उसकी सास पार्वती के बीच में तू तू मैं मैं चलता ही रहा। एक भी क्षण ऐसा नहीं होता, जब कि वे आपस में किसी बात को लेकर झगड़ती न हों। सास कुछ कहती तो बहू उसका खंडन करती, बहू कोई प्रस्ताव रखती तो सास अपना पूरा बल लगाकर उसका विरोध करती। किसी दिन बहू नयी साड़ी पहनती और बालों में फूल गूँथकर अपनी सहेलियों से मिलने जाने लगती तो बस, सास की बकबक शुरू हो जाती, अनाप-शनाप सुनाने लगती। कहने लगती, ''यह घर है या बाज़ार? बहुएँ अपने को कहीं यों सजाती हैं? अपनी सुंदरता को प्रदर्शित करने का यह पागलपन घर को बरबाद करके छोड़ेगा।''

''मैं सजधज कर जाने लगती हूँ तो तुम्हें इतनी ईर्ष्या क्यों होती है? मैं जो चाहती हूँ, करके रहूँगी। तुम कौन होती हो, मुझे रोकनेवाली?'' निस्संकोच वह कह देती और बाहर चली जाती।

पार्वती किसी दिन मीठा बनाने को कह देती तो असंघती जमकर उसका विरोध करती और कहती कि ''मेरे पति को खट्टा ही पसंद है।'' उसके स्वर में कडुवापन भरा हुआ होता था।

बेचारा अमर दिन भर खेत में कड़ी मेहनत करता था और शाम को ही घर लौटता था। पर सास-बहू के ये झगड़े उसके मन को अशांत कर देते थे। सहज ही वह कोमल स्वभाव का था, इसलिए पत्नी को या न ही अपनी माँ को समझा पाता था। उसकी स्थिति दयनीय थी।

एक दिन शाम को खेत के किनारे बैठ गया और सोचने लगा कि क्या करूँ? सन्यासी बन जाऊँ या कहीं भाग चलूँ। तब उसी रास्ते से गुज़रते हुए उसके मित्र भीम और राम ने उसे देख लिया। वे उसके पास आये और पूछा, ''अमर, क्या हुआ? इतने उदास क्यों हो? अभी-अभी तो शादी हुई है। घर गये बिना यहाँ क्यों बैठे हो?''

अमर ने उन्हें अपनी स्थिति समझायी और

कहा, "यह सब मेरा दुर्भाग्य है। इससे बचने का कोई रास्ता भी तो नहीं है। मैं तो तंग आ गया हूँ। कर भी क्या सकता हूँ। मेरी बात छोड़ो, यह तो बताओ, दोनों कहाँ जा रहे हो?"

राम ने कहा, "पड़ोस के गांव में नाटक प्रदर्शन हो रहे हैं। हम भी उनमें वेषधारी हैं। श्रीराम नवमी के अवसर पर यह कार्यक्रम हो रहा है।"

भीम ने उसे आश्वासन देते हुए कहा, "पत्नी और माँ के झगड़ों को लेकर इतना परेशान क्यों हो रहे हो? जल्दी ही तुम्हारी समस्या का परिष्कार हो जायेगा। धीरज रखो।"

"हाँ, हाँ, भीम का कहा होकर रहेगा। निश्चित होकर घर जाओ।" राम ने कहा।

एक हफ़्ता गुज़र गया। पूर्णिमा की रात थी। अमर गाढ़ी निद्रा में था। पिछवाड़े में कुएँ के पास अचानक ज़ोर की ध्वनि हुई।

सास और बहू चौंककर उठ बैठीं। दोनों दरवाज़ा खोलकर तेज़ी से पिछवाड़े में गयीं।

कुएँ के किनारे जटाओंवाले दो भूत बैठे हुए थे। वे गहनों की गठरी को हिलाते हुए आपस में ज़ोर-ज़ोर से बातें कर रहे थे। यह दृश्य देखकर सास-बहू चिल्लाने ही वाली थीं, पर उनके गलों से आवाज़ निकल नहीं पायी। उन दोनों को देखकर दोनों भूत कुएँ के किनारे से उतरे और कहने लगे, "डरो मत। जिस तरह से मनुष्यों में अच्छे मनुष्य होते हैं, उसी तरह से भूतों में भी अच्छे भूत होते हैं। असल में हम एक ऐसे घर की तलाश में हैं, जहाँ सास-बहू आपस में झगड़ती न

हों। उन्हें गहनों की यह गठरी देना चाहते हैं। गाँव भर में हमने बहुत ढूँढ़ा, पर ऐसा एक भी घर दिखायी नहीं पड़ा। लगता है, इस घर में भी सास-बहू के बीच अच्छे संबंध नहीं हैं।''

उनकी बातें सुनकर पार्वती ने साहस बटोरा और कहा, ''पर यह तो बताओ कि गहनों की यह गठरी तुम्हें कहाँ से मिली?'' एक-एक क़दम आगे बढ़ाती हुई उसने पूछा।

उसके इस सवाल पर छोटे भूत ने अपने दोनों हाथों से सिर को खुजलाते हुए कहा, '' यह तो लंबी कहानी है। संक्षेप में बताता हूँ, सुनो, परसों रात को जब हम जंगल में घूम-फिर रहे थे, तब दो चोरों को हमने देखा। एक के हाथ में गहनों की यह गठरी थी। हमें देखते ही भय के मारे वे गठरी वहीं छोड़कर भाग निकले।''

यह सुनते ही पार्वती कुछ और पूछने ही वाली थी कि अरुंधती ने इशारे से उसे रुकने को कहा और भूतों से पूछा, ''तुम्हारी कही बातें अक़्लमंदों को विश्वास योग्य लगती हैं। पर तुम लोगों को ये गहने गरीबों को दान में देने चाहिए। परंतु तुम उन सास-बहू को ही देना क्यों चाहते हो, जो आपस में झगड़ती नहीं हैं?''

इसके जवाब में लंबी जटाओं के भूत ने चिंता भरे स्वर में कहा, ''बहू, तुमने तो बड़ा ही जटिल प्रश्न पूछ डाला। हम दोनों भी तुम दोनों की ही तरह फालतू बातों को लेकर झगड़नेवाली सास-बहू थीं। हमारे घर के सामने एक प्रार्थना मंदिर हुआ करता था। उसमें एक जटाधारी मुनि ध्यान में मग्न रहता था। हमारी चिल्लाहटों व झगड़ों के

कारण उनके ध्यान में भंग पड़ता था। वे हमपर क्रोधित हो उठे और हमें भूत बन जाने का शाप दिया। हम उनके पांवों पर गिरकर क्षमा माँगने लगे। तब उन्होंने कहा कि जिस घर में सास-बहू के बीच अच्छे संबंध हों, उनका अगर तुम भला करोगे तो तुम दोनों शाप से मुक्त हो जाओगे और तुम्हें फिर से मनुष्य रूप मिल जायेगा।''

तब अरुंधती ने कहा, ''गहनों की यह गठरी हमें दे दोगे न?''

''अवश्य देंगे। इसके बदले आपको हमें कुछ देना होगा,'' छोटे भूत ने कहा।

सास-बहू ने आशा-भरे स्वर में एक साथ कहा, ''अवश्य, कहिये, आपको हम क्या दें?''

''अगली पूर्णिमा के दिन गहनों की इस गठरी को लेकर फिर से आयेंगे। हमको विश्वास हो जाना

चाहिये कि गहनों की इस गठरी के लिए नहीं, बल्कि सचमुच ही तुम दोनों के बीच अच्छे संबंध हैं, तुम एक-दूसरे का आदर करते हो। हम अदृश्य रहेंगे, पर हम तुम दोनों पर नज़र रखेंगे। सबेरा होने जा रहा है, जाओ और अपने-अपने काम में लग जाओ।'' दोनों भूतों ने कहा।

सास-बहू ने खुश होते हुए सिर हिलाया और एक-दूसरे का हाथ पकड़े अंदर चली गयीं। भूत भी दीवार फांदकर आंखों से ओझल हो गये।

दूसरे ही दिन से सास-बहू, माँ-बेटी की तरह रहने लगीं। अब उनमें किसी प्रकार का मन-मुटाव नहीं था। एक-दूसरे की बात टालते नहीं थे। उनमें हुए परिबर्तन को देखकर अमर चकित रह गया और उसे आनंद भी हुआ। यों तीस दिन बीत गये।

वह पूर्णिमा की रात्रि थी। चांदनी बिछी हुई थी। सास-बहू बड़ी बेचैनी से भूतों का इंतज़ार करने लगीं। बिना सोये वे उनकी प्रतीक्षा में थीं। सूर्योदय होने को था, पर भूतों का पता नहीं।

सास पार्वती ने बहू असंधती से दुख-भरे स्वर में कहा, ''भूतों ने हमसे कहा था कि बिना किसी प्रकार के स्वार्थ के हमें एक दूसरे के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करना चाहिये। परंतु कभी-कभी मेरे मन में स्वार्थ उभर आया और मैंने तुमसे प्रेम का नाटक किया। भूतों ने यह जान लिया होगा। इसीलिए वे आये नहीं।''

''तुम्हारी ही तरह मेरे मन में भी बुरे विचार आये। गहनों की बात छोड़ो। हम आगे से क्यों न अच्छे बने रहें; एक-दूसरे की इज़्ज़त क्यों न करें? एक महीने तक हमारे संबंध बड़े ही मीठे रहे। इसी तरह झगड़ा किये बिना भविष्य में भी रहेंगी। तब, आपका बेटा भी खुश होगा।'' असंधती ने गंभीर स्वर में कहा।

''हाँ, हाँ, तुमने ठीक कहा। छोटी हो, फिर भी तुमने कितना ठीक सोचा।'' कहती हुई पार्वती ने बहू की भरपूर प्रशंसा की।

बगल के कमरे में लेटे अमर ने उन दोनों की बातें सुन लीं। सास-बहू में हुए परिवर्तन को देखकर उसे बहुत आनंद हुआ। पर उसे यह मालूम नहीं था कि उसके दोनों दोस्त भूतों के रूप में आये और सास-बहू का यह झगड़ा ख़त्म कर दिया।

भल्लूक मांत्रिक

19

(राजा जितकेतु ने घोषणा की कि माया मर्कट के मंत्र-दण्ड को लानेवाले के साथ मैं अपनी दत्तक पुत्री का विवाह करूँगा और उसे आधा राज्य भी दिया जाएगा। इसके बाद माया मर्कट को क़िले की दीवार पर देख जंगली युवक ने उस पर बाण चलाया । मर्कट ने उस बाण को कालीवर्मा तथा भल्लूक मांत्रिक की ओर फेंक दिया। इसके बाद...)

बाण की चोट खाने के पूर्व ही माया मर्कट चिल्ला उठा - 'मेरा मंत्र-दण्ड कहाँ?' इस चिल्लाहट को सब ने सुना। इस पर भल्लूक मांत्रिक विस्मय में आकर बोला, ''हे मेरे शिष्य कालीवर्मा! तुमने उसकी पुकार सुनी है न? मर्कट ने मेरे मंत्र-दण्ड को खो दिया या किसी ने उसे चुरा लिया है। इसका यही अर्थ है न?''

कालीबर्मा बोला, ''हाँ, गुरुजी! इस बंदर से किसी ने उस मंत्र-दण्ड को चुरा लिया है। लेकिन हम कैसे पता लगायें कि वह कौन है? अगर हम नगर में घुसना चाहें तो यह भी आसान मालूम नहीं होता! दुर्ग के दर्वाज़े लोहे के हैं। राजा दुर्मुख के क़िले के दरवाजे लकड़ी के बने थे, इस वजह से हम उनमें आग लगाकर क़िले में घुस पाये।''

इस पर भल्लूक मांत्रिक बोला, ''आज रात को हमलोग दुर्ग के बाहर ही डेरे लगाकर रात उनमें बितायेंगे। क़िले के दरवाजे कैसे तोड़ना है, यह बात कल हम इतमीनान से सोच लेंगे।''

बैरागी युवक नगर के बाहर तालाब की मेंड पर बरगद के नीचे मंत्र जपनेवाले अपने गुरु की ओर बढ़ रहे थे।

उन युवकों में से छोटे के हाथ से बड़ा युवक मंत्र दण्ड अपने हाथ में लेकर बोला, ''अरे भैया! यह मंत्र दण्ड गुरु के हाथ में सौंपने के पहले हम इसकी महिमा की जांच करके देख लेंगे।''

छोटे बैरागी ने स्वीकृतिसूचक सर हिलाया। तब बड़े ने मंत्र-दण्ड को ऊपर उठाकर, ''अहां, इहीं, उहूँ, ख़ज़ाने के द्वार खोल दो'' मंत्र जपते उसे जोर से ज़मीन पर दे मारा।

उस वक़्त जो बड़ी आवाज़ हुई, उसे सुनकर गुरु बैरागी आँखें खोले बिना बोला, ''अरे भैरव बैरागी के सामने ही मंत्र का गलत उच्चारण करनेवाला पापी कौन है? मैं अभी उसे भस्म किये देता हूँ।'' यों कहते गुरु बैरागी ने अपने पीतल तथा चांदी के फूल जड़े नाटे दण्ड को ऊपर उठाया।

अपने गुरु के बचन सुन बैरागी के दोनों शिष्य भय कंपित हो उठे, इतने में मंत्र-दण्ड के प्रहार से जमीन में एक दरार पड़ गई और उसमें से एक जलधारा फव्वारे की तरह फूट निकली। उसे देख दोनों शिष्य चकित हो उठे। गुरु बैरागी क्रोध में आकर दांत किटकिटाते हुए आँखें खोलने को हुए, तभी उन पर जल की मूसल धार गिर पड़ी।

भैरव बैरागी, ''गुरु प्रभु!'' चिल्लाते उछलकर खड़े हो गये और बोले, ''अरे, बिना बिजली की कड़क व चमक के यह वर्षा कैसी?'' फिर दूर पर खड़े अपने शिष्यों की ओर देख पूछ बैठा, ''अरे,

ये बातें सुन राक्षस उग्रदण्ड दांत भींचकर बोला, ''मेरा पत्थरवाला गदा क़िले के दरवाजों को तोड़ न पाया, पर देखता हूँ कहीं दीवारों को तोड़ दे।'' इन शब्दों के साथ उसने गदे से दीवार पर प्रहार किया। उस प्रहार से क़िले के पत्थरों में एकाध पत्थर टूट गया और उसके दो-चार टुकड़े नीचे गिरे। दूसरे ही क्षण दीवार पर से सैनिकों ने उग्रदण्ड पर बाणों की वर्षा की।

भल्लूक मांत्रिक ने उग्रदण्ड को हट जाने का आदेश दिया और कालीवर्मा से कहा, ''कालीवर्मा! मेरे मन में यह संदेह हो रहा है कि कहीं किसी और मांत्रिक ने मर्कट के हाथ से मेरा मंत्र-दण्ड चुरा लिया हो!''

राजमहल के सामने भालू के प्रहार से डरने के कारण मर्कट के हाथ से जो मंत्र-दण्ड फिसलकर नीचे गिरा था, उसे अपने झोले में डालनेवाले दो

ज़मीन से आसमान की ओर जलधारा ऊपर उठ रही है। यह कैसे आश्चर्य की बात है!''

ये बातें सुन बैरागी के दोनों शिष्य हिम्मत बटोरकर बोले, ''भैरव गुरु! हम अपनी मंत्र-शक्ति से इस जलधारा को जमीन से ऊपर ले आये। अब हमारी विद्या समाप्त हो गई है न?'' गुरु विस्मय के साथ अपने शिष्यों की ओर बढ़े और अपने बड़े शिष्य के हाथ में मंत्र-दण्ड को देख चकित हो बोले, ''अरे, यह क्या? मंत्र-दण्ड जैसा लगता है!''

''गुरुजी! यह मंत्र-दण्ड जैसी चीज़ नहीं, बल्कि मंत्र-दण्ड ही है। हमने तीन शब्दों का उच्चारण करके खजाने के दर्वाजे खोलने को कहा, पर इसने पाताल गंगा को ऊपर ला दिया।'' बड़े शिष्य ने कहा।

इसके बाद भैरव बैरागी ने अपने शिष्य के हाथ से मंत्र-दण्ड ले लिया, उसे इधर-उधर घुमाकर देखा, तब कहा, ''यह मंत्र-दण्ड किसी मांत्रिक के हाथ मसलकर चिकना हो गया है। यह आखिर तुम्हारे हाथ कैसे आ गया? क्या तुम लोगों ने इसकी चोरी की? वह मांत्रिक कहाँ है?''

बड़े शिष्य ने छोटे शिष्य को मौन रहने का इशारा किया, गुरु के हाथ से झट से मंत्र-दण्ड छीन लिया, फिर कहा, ''गुरुजी! सब से पहले हमें जल की धारा को रोकना है! वरना कुछ ही घंटों में सारा नगर पानी में डूब जाएगा।'' यों समझाकर मंत्र-दण्ड ऊपर उठाया, फिर बोला, ''तुम ख़ज़ाने के दरवाजों को बंद करो।'' यों

कहते जल-धारावाले प्रदेश पर जोर से दे मारा।

इस बार मंत्र-दण्ड के आघात से पृथ्वी बड़ी ध्वनि के साथ फट गई, वहाँ पर एक विशाल खाई बन गई। उसे देखते ही भैरव बैरागी उछल पड़ा और बोला, ''अरे शिष्यो, तुम लोगों ने चाहे जिस किसी भी प्रकार से इसे पा लिया हो, मगर यह मंत्र-दण्ड मेरे वास्ते उपहार के रूप में ले आये हो ! मैं तुम लोगों की गुरु भक्ति पर प्रसन्न हूँ! लगता है कि अब जल-धारा बंद हो गई है और ख़ज़ाने के दरवाजे खुल गये हैं! तुम लोग इसके नीचे उतरकर वहाँ के ख़ज़ानों का पता लगाओ।''

छोटा शिष्य मंत्र-दण्ड की ओर शंका भरी नज़र से देखता रहा, तब बोला, ''भैरव गुरु! मुझे डर लगता है कि इस मंत्र-दण्ड की शक्तियों पर विश्वास करके हम लोग किन्हीं मुसीबतों में फंसने जा रहे हैं । हमने ख़ज़ाने के दरवाजे खोलने को

बताया तो इसने जल-धारा को खोल दिया। इसे देखते हुए मेरा विश्वास हिलता जा रहा है कि हमें ख़ज़ाना मिल पाएगा।''

भैरव बैरागी यों सोचते हुए अपने बड़े शिष्य के हाथ से मंत्र-दण्ड लेकर उसे परखकर देखने लगा, तब बड़ा शिष्य खिल-खिलाकर हँस पड़ा और बोला -''गुरुजी! हम नहीं जानते कि इस मंत्र-दण्ड की महिमा क्या है? इसकी मंत्र-शक्तियाँ रखनेवाले एक मर्कट के हाथ से हमने इसे प्राप्त किया है। वह इस वक़्त राजा जितकेतु का महामंत्री है। उस राजा ने यह घोषणा की है कि खोये हुए उस मंत्र-दण्ड को ला देनेवाले को अपना आधा राज्य देकर उसके साथ वे अपनी पुत्री का विवाह भी करेंगे।''

आधा राज्य और राजकुमारी की बात सुनते ही भैरव बैरागी उत्साह में आकर चिल्ला उठा, ''गुरु प्रभु!'' फिर बोला, ''अरे मेरे शिष्यो! तुम लोगों ने इस ख़ास बात को अभी तक मुझसे छिपाकर क्यों रखा? तब तो मैं आधा राज्य ले लूँगा और तुम में से एक राजकुमारी के साथ बिवाह कर लेना। यह निर्णय तो बड़ा ही अच्छा है, मगर राजाओं की बातें इतनी जल्दी विश्वास करने योग्य नहीं होती ! राजा जितकेतु अगर हमारे हाथों से मंत्र-दण्ड लेकर हमारे सर कटवा दे तो हम लोग कर ही क्या सकते हैं? यों कहकर वह सर झुकाये बरगद के तने से सटकर लुढ़क पड़ा। अपने गुरु के मुँह से ये बातें सुनने पर बैरागी के शिष्यों के मन में भी यह शंका पैदा हो गई कि शायद राजाओं की बातें यक़ीन करने लायक़ न होंगी! छोटा शिष्य पृथ्वी पर बनी खाई के समीप जाकर बड़े शिष्य के हाथ के सहारे से सुरंग के अन्दर उतर पड़ा, तब दूसरे ही क्षण चिल्ला उठा, ''भैरवगुरु! ऐसा लगता है कि यहाँ पर कोई सीढ़ियाँ और सुरंग भी हैं। शायद मंत्र-दण्ड ने हमारे वास्ते ख़ज़ाने के दरवाजे खोलकर रख दिये हैं।''

इस पर भैरव बैरागी उत्साहपूर्वक अपने शिष्यों के समीप आया, तब बोला, ''अरे मेरे शिष्यो! हमारी क़िस्मत से अगर हमें गड़ा हुआ ख़जाना हाथ लगा तो फिलहाल हम उससे संतुष्ट हो जायेंगे ! इसके बाद हम लोग इतमीनान से सोच लेंगे कि यह मंत्र-दण्ड राजा के हाथ सौंप देना है या नहीं!'' यों कहते वह भी अपने शिष्य के पीछे सुरंग के रास्ते नीचे उतरने लगा।

इसके बाद गुरु और शिष्य सीढ़ियाँ पार करते

थोड़ी और गहराई तक पहुँचे। तब उन लोगों ने देखा कि वहाँ का सारा प्रदेश जल से भरा हुआ है। वे लोग घुटनों तक की गहराई में थोड़ी दूर और पैदल चले, तब उन्हें सुरंग के मार्ग में दूर धुंधली रोशनी दिखाई दी।

इस पर भैरव बैरागी बहुत ही खुश हुआ और अपने शिष्यों से बोला, ''शिष्यो, वह रोशनी और कोई चीज़ नहीं है, ख़ज़ाने के मणि-मानिकों की कांति ही यों चकाचौंध कर रही है। मान लो, अगर उस ख़ज़ाने की रक्षा करते हुए वहाँ पर कोई यक्ष हो तब हमें क्या करना होगा?''

''यह बात तो आप गुरु ही हमें बता सकते हैं?'' बड़े शिष्य ने कहा।

ये बातें सुन छोटा शिष्य हँसते बोला, ''भाई, तुम्हें गुरु के बताये मंत्र तो याद हो गये, मगर तुम्हें रत्ती भर भी लौकिक ज्ञान नहीं है! क्या तुमने कभी सोचा भी है कि हमें ख़जाना दिखानेवाला यह मंत्र-दण्ड कैसी अद्‌भुत शक्तियाँ रखता है? उस ख़जाने का पहरा देनेवाले यक्ष के शरीर पर यह मंत्र-दण्ड छुआ दे, तो बस वह पटाखे की तरह भुन जाएगा!''

''अरे उपशिष्य! तुमने ख़ूब कहा! मेरा मंत्रोपदेश तुम्हारी समझ में आ गया है! अब तुम चुपचाप आगे बढ़ जाओ!'' भैरव बैरागी ने रोशनी की ओर मंत्र-दण्ड से इशारा करते हुए कहा।

उसी वक़्त सुरंग के ऊपर ज़मीन के हिलने की ध्वनि के साथ हाथी का चिंघाड़ भी सुनायी पड़ा। इस पर वे तीनों दो-चार पल तक डर के मारे स्तंभित रह गये। पर पहले बैरागी संभलकर बोला, ''अरे शिष्यो, लगता है कि हमारे बरगद के नीचे कोई जंगली हाथी या गज सैनिक आ गये हैं। यदि वे हमारे इस गुप्त सुरंग मार्ग के भीतर उतर आयें तो हमें क्या करना होगा?''

''आप तो हमारे गुरु हैं। इसलिए आप ही को सोच-समझकर हमें उपाय बताना होगा!'' बड़े शिष्य ने कहा।

तब छोटा शिष्य खिल खिलाकर हँस पड़ा और बोला, ''जंगली हाथियों और गज सैनिकों को तालाब की मेंडों पर खाइयों को देखने के सिवाय क्या दूसरा कोई काम नहीं है? इसलिए आप लोग सामने दिखाई देनेवाले रत्नों के ढेरों को छोड़ और बातों के बारे में बिलकुल न सोचियेगा!''

उसकी बात पूरी होने के पहले ही ऊपर से

मिट्टी का एक ढेला टूटकर धम्म से उनके आगे गिर पड़ा। इस पर गुरु व शिष्य भय से कंपित हो धीरे से चीख़ उठे और सुरंग की राह दौड़ने लगे!

उस वक़्त उस सुरंग मार्ग के ऊपर स्थित तालाब की मेंड पर डेरे लगवाने के ख़्याल से अच्छी जगह की खोज करते बधिक भल्लूक और जंगली युवक हाथी पर आ पहुँचे। तब उनका एक हाथी अचानक ज़मीन में धंस गया। चिंघाड़ करते आगे की ओर गिर पड़ा। तब वे दोनों हाथी पर से नीचे कूद पड़े। दूसरे ही क्षण हाथी ज़मीन पर सूंड़ का प्रहार करते उठ खड़ा हुआ।

बधिक भल्लूक ने एक बार चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई, तब जंगली युवक से कहा, ''सुनो, कालीवर्मा साहब और भल्लूक मांत्रिक भी एक बार इस प्रदेश को देख लें तो अच्छा होगा! यहाँ पर पानी की कोई कमी नहीं है! हम राजा जितकेतु के जिस दुर्ग पर आक्रमण करना चाहते हैं, वह भी समीप में ही है। चाहे माया मर्कट ने जितने भी मंत्र क्यों न सीख लिये हों, अगर वह अपने स्वभाव से लाचार होकर जटावाले इस बरगद पेड़ की ओर आ धमका तो हम बड़ी आसानी से उसे पकड़कर भल्लूक मांत्रिक के मंत्र-दण्ड को हड़प सकते हैं।''

पर जंगली युवक हाथी को इधर-उधर चला कर देख रहा था कहीं उसका पैर टूट तो नहीं गया है! पर हाथी को ठीक से चलते देख बधिक भल्लूक से बोला, ''भल्लूक साहब! हमारे वाहन के पैर बिलकुल ठीक हैं! हम तो बड़े ही भाग्यवान हैं!''
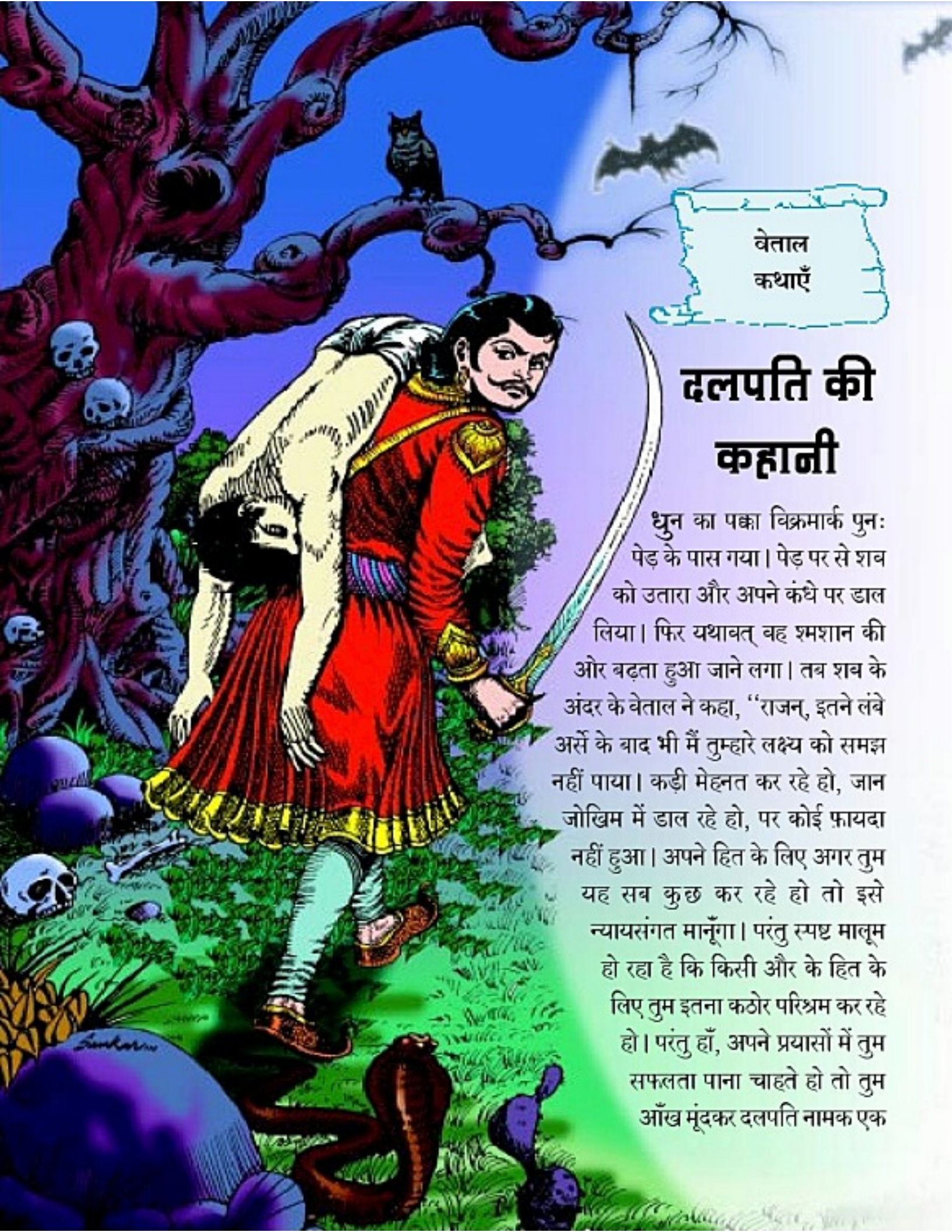
दूसरे ही पल में बरगद की डालों में से एक बहेलिया नीचे कूद पड़ा और बोला, ''यह तो क़िस्मत की बात ही कही जाएगी कि कपटी बैरागियों को जिस सुरंग ने अपने पेट में ले लिया, उस सुरंग की ओर तुम्हारा हाथी नहीं बढ़ा। बरना वह सुरंग तुम लोगों को भी बैरागियों की भांति अपने पेट के अन्दर समा लेता।''

ये बातें सुन बधिक भल्लूक, ''सिरस भैरव'' पुकारते अपना परशु उठाकर चिल्ला उठा, ''अबे, तुम कौन हो? माया मर्कट के शिष्य तो नहीं हो?'' यों पूछते यह बहेलिये की ओर चल पड़ा।

(और है)

वेताल कथाएँ

दलपति की कहानी

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव को उतारा और अपने कंधे पर डाल लिया। फिर यथावत् वह श्मशान की ओर बढ़ता हुआ जाने लगा। तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, ''राजन्, इतने लंबे अर्से के बाद भी मैं तुम्हारे लक्ष्य को समझ नहीं पाया। कड़ी मेहनत कर रहे हो, जान जोखिम में डाल रहे हो, पर कोई फ़ायदा नहीं हुआ। अपने हित के लिए अगर तुम यह सब कुछ कर रहे हो तो इसे न्यायसंगत मानूँगा। परंतु स्पष्ट मालूम हो रहा है कि किसी और के हित के लिए तुम इतना कठोर परिश्रम कर रहे हो। परंतु हाँ, अपने प्रयासों में तुम सफलता पाना चाहते हो तो तुम आँख मूंदकर दलपति नामक एक

युवक का अनुसरण करो। वह अव्वल दर्जे का कपटी, धोखेबाज और वाक् चतुर है। पर तुममें इन गुणों का अभाव है। इन गुणों के होने पर ही तुम सफल हो पाओगे। उसकी कहानी मुझसे सुनो।'' फिर बेताल दलपति की कहानी यों सुनाने लगा:

लक्ष्मीपुर नामक गाँव के समीप ही एक छोटा सा जंगल था। लोगों का कहना था कि उसमें भूत-प्रेत रहते हैं। जंगल की हर भूतनी हरे रंग की साड़ी पहनती थी और दो जटाओं से सुसजित होकर युवती के रूप में घूमती-फिरती रहती थी।

लक्ष्मीपुर से थोड़ी दूरी पर कामापुर नामक एक गाँव था। वहाँ गजपति नामक एक व्यसनी था। जूए में उसने सब कुछ खो दिया। कितने ही लोगों को उसे कर्ज चुकाना था। तंग आकर आखिर उन सब ने गजपति को चेतावनी दी कि निश्चित तारीख़ के अन्दर अगर उनकी रक़म लौटायी नहीं गयी तो वे न्यायाधिकारी से कड़ी सजा दिलवायेंगे। भय के मारे गजपति लक्ष्मीपुर आ गया। वहाँ किसी ने उससे कहा कि जंगल में सोना है और वहाँ जाकर अपना भाग्य आजमाओ। वह उस छोटे से जंगल में गया और घूमते-घूमते थक कर एक पेड़ के नीचे आराम करने लगा।

थोड़ी देर बाद किसी की ज़ोर की चिल्लाहट सुनकर उस तरफ़ वह गया तो वहाँ उसे एक घर दिखायी पड़ा। दरवाज़ा खुला था। वहाँ एक युवक ज़मीन पर पड़ा हुआ था। उसके पास हरे रंग की साड़ी में एक युवती बैठी थी।

गजपति को यह मालूम नहीं था कि इस जंगल में भूत हैं। वहाँ ऐसी सुंदर युवती को देखकर आश्चर्य-भरे स्वर में उसने पूछा, ''क्या हुआ?''

''घर के बाहर खड़े होकर इसने पानी मांगा। मैंने उसे अंदर बुलाया। अंदर आते ही मुझे देखकर बेहोश हो गया।'' युवती ने कहा।

उस युवती की कंठ ध्वनि बड़ी ही कर्कश थी। उसकी बातें सुनकर गजपति एकदम घबरा गया और बोला, ''तुम्हारी कर्कश कंठ ध्वनि सुनकर कौन नहीं घबरायेगा?''

''हाँ, तुमने ठीक ही कहा। तुम एकमात्र वह युवक हो, जिसने साहस के साथ मुझसे बातें कीं। इसे होश में ले आओ और इससे बातें करते रहो। इतने में मैं तुम दोनों के लिए भोजन ले आऊँगी।'' कहती हुई वह बग़ल के कमरे में गयी।

गजपति उस युवक के पास बैठ गया और उसके मुँह पर पानी छिड़का। वह उसे ढ़ाढ़स बंधाते हुए कहने लगा, ''अब आँखें खोलो। मैं हूँ ना, तुम डरो मत।''

युवक ने आँखें खोलीं और कमज़ोर स्वर में पीने के लिए पानी माँगा।

गजपति ने उसे पीने का पानी दिया और कहा, ''एक लड़की को देखकर डर गये और बेहोश हो गये। इतना डरपोक हो तो जंगल में आने की क्या ज़रूरत थी?''

युवक ने बताया कि उसका नाम चलपति है। फिर कहा, ''यह कोई साधारण लड़की नहीं है। भूतनी है, इसीलिए मैं डर गया। मैं लक्ष्मीपुर का निवासी हूँ। मुझे मालूम है कि इस जंगल में भूत-प्रेत हैं।''

चलपति ने कारण बताते हुए कहा, ''मेरी माँ अचानक सख्त बीमार पड़ गयी। वैद्य ने कहा कि इसका इलाज काले आम से ही हो सकता है, जिसे खाने पर सब रोग दूर हो जाते हैं। मुझे मालूम था कि यह काला आम सिरिपुर में ही उपलब्ध है। मुझे यह भी मालूम था कि वहाँ पहुँचने के लिए इस जंगल से गुज़रना पड़ता है और यहाँ भूत-प्रेत हैं। मैं भूत-प्रेतों से बेहद डरता हूँ। डर था, फिर भी इस घर के पास आया और पानी मांगा। अंदर से आवाज़ आयी, 'यहाँ पानी की कोई कमी नहीं। अंदर आओ और जितना पानी चाहते हो, पी जाओ।' वह बूढ़े की आवाज़ सी लग रही थी। अंदर आया तो हरे रंग की साड़ी में दो जटाओं वाली एक युवती दिखायी पड़ी। मैं समझ गया कि वह भूतनी है। बस, डर के मारे बेहोश हो गया। मुझे बचाओ और यहाँ से ले चलो।'' चलपति गिडगिडाया।

जैसे ही गजपति को मालूम हुआ कि जिस युवती से उसने बातें कीं, वह भूतनी है, तो डर के मारे वह भी थरथर कांपने लगा। तब हरे रंग की साड़ी पहनी वह युवती आयी। उसके हाथ में एक थाली थी और उसमें पकवान थे। वह मुस्कुराती हुई बोली, ''तो आप दोनों का मानना है कि मैं भूतनी हूँ और आपके लिए मैं अब नरमांस ले आयी हूँ।'' गजपति और चलपति ज़ोर से चिल्लाते हुए बेहोश हो गये।

पास ही के मार्ग से गुज़रते हुए दलपति नामक युवक ने उनकी यह चिल्लाहट सुनी। वह सिरिपुर

गांव का निवासी था। उषा नामक एक लड़की से उसका प्रेम था। उषा के माँ-बाप इस बात पर अड़े हुए थे कि हज़ार अशर्फ़ियाँ देने पर ही उसकी शादी उनकी बेटी से होगी। दलपति के पास इतना धन नहीं था। वह ज्योतिष में विश्वास रखता था, इसलिए यह जानने के लिए कि उसकी शादी उषा से होगी या नहीं, वह ज्योतिषी से मिला।

ज्योतिषी ने, दलपति की जन्म-कुंडली देखकर कहा, "जिस लड़की से तुम प्रेम करते हो, उससे तुम्हारे विवाह के होने की संभावना है। आज ही जंगल के मार्ग से होते हुए लक्ष्मीपुर जाओ। वहाँ के राम के मंदिर में पूजा करो। सफ़र के दौरान किसी बीमारी से पीडित हो जाओगे तो सब रोगों को दूर करनेवाला एक काला आम खा लेना। अपने साथ कुछ काले आम भी ले जाना। लोगों का कहना है कि उस जंगल में भूत-प्रेत हैं। क्या तुम वहाँ जाने का साहस कर सकते हो?"

"मैं जन्म-कुंडली पर विश्वास रखता हूँ। भूत-प्रेत पर विश्वास नहीं रखता," दलपति ने उत्साह के साथ कहा।

इसके बाद, दलपति ने अपने घर के पिछवाडे के आम के पेड़ से कुछ काले आम तोड़े और थैली में डाल लिये। लक्ष्मीपुर जाने केलिए निकलकर जंगल में प्रवेश किया। तभी उसे गजपति और चलपति की चिल्लाहटें सुनायी पडीं।

चकित दलपति उस घर की ओर गया, जहाँ से ये चिल्लाहटें आयीं। अंदर जाने के बाद उसने देखा कि दो युवक वहाँ बेहोश गिरे पड़े हैं और उनके बगल में हरे रंग की साड़ी पहनी एक युवती बैठी है। उसकी सुंदरता को देखकर वह सन्न रह गया और उससे पूछा, "कौन हो तुम?"

"मैं खुद नहीं जानती कि मैं कौन हूँ। इन दोनों युवकों ने मुझे भूतनी समझ रखा है। हो सकता है, यह सच हो।" उस युवती ने कहा।

दलपति ने उसे संदेह-भरी दृष्टि से देखा और कहा, "भूत-प्रेत होते ही नहीं। तुम मानव हो, पर तुम किसी रोग के शिकार हो। इसी कारण तुम अपना भूत भूल गयी। तुम्हारा कंठ स्वर भी कर्कश स्वर में बदल गया। मेरे पास काला आम है। उसे खाने से सब रोग दूर हो जाते हैं। वह अचूक दवा है। इसे खाओगी तो तुम्हें गुज़रे दिन याद आ जाएँगे।"

वह घबराती हुई बोली, "मैं बीमार नहीं हूँ।

काला आम खाना मेरे लिए निषिद्ध है। इन दोनों को लेकर तुम यहाँ से फौरन चले जाओ।''

''मैं यह विश्वास नहीं करता कि तुम भूतनी हो। तुमसे यह काला आम खिलवाकर ही मैं यहाँ से जाऊँगा।'' कहते हुए उसने थैली में से एक आम निकाला।

उसे देखते ही वह घबराती हुई बोली, ''अंदर के कमरे में सोने की अशर्फियाँ थैलियों में भरी पड़ी हैं। जितना सोना चाहते हो, ले जाना।''

दलपति ने थैली में से आम का फल जैसे ही निकाला, वह चिल्लाती हुई बग़ल के कमरे की ओर भाग गयी। दलपति उसके पीछे-पीछे कमरे में गया, पर वह वहाँ नहीं थी, परंतु उसके कहे अनुसार वहाँ अशर्फियों से भरी कई थैलियाँ थीं।

दलपति कमरे से बाहर आया और गजपति, चलपति के चेहरों पर पानी छिड़का। थोड़ी ही देर में वे होश में आये और बैठ गये। उसने उनसे अपने बारे में विशद रूप से बताया और उनके बारे में भी जानकारी प्राप्त की।

जैसे ही चलपति को मालूम हुआ कि दलपति के पास आम हैं तो वह बहुत खुश हुआ। उसने एक फल दलपति से लिया और कहा, ''तुम बड़े साहसी हो। भूतनी को भी भगा दिया।''

दलपति ने जब बिश्वास के साथ कहा कि वह भूतनी नहीं है तो गजपति ने सवाल किया, ''तो हरे रंग की साड़ी पहनी वह युवती यहाँ क्यों है? वह कैसे ग़ायब हो गयी?''

''सुनने में आया कि अवंती के राजा जब
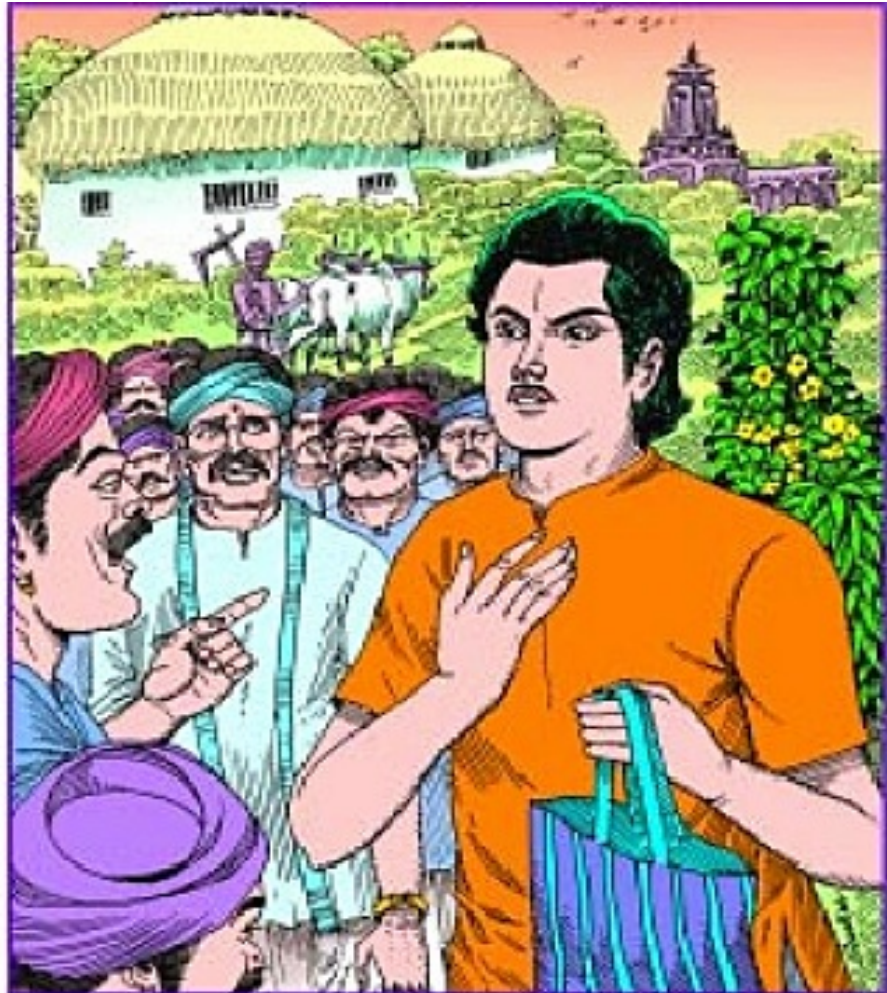
युद्ध में हार गये, तबसे उनके वारिस इस जंगल में रहते रहे हैं। वे नहीं चाहते कि किसी को यह राज़ मालूम हो। हो सकता है, वह कन्या अवंती राजा की पुत्री हो। लोगों को दूर रखने के लिए अपने को भूतनी कहकर शायद प्रचार कर रही हो।'' दलपति ने कहा।

''हमारे विश्वास तुम्हारे विश्वासों से भिन्न हैं। तुम्हीं बताओ कि अब हम क्या करें?'' गजपति और चलपति ने पूछा।

दलपति के कहे अनुसार तीनों ने सोने की अशर्फियों की एक-एक थैली ले ली। उन्होंने निर्णय भी कर लिया कि यह रहस्य किसी और को मालूम न हो। वहां से निकलने के बाद गजपति सीधे कामापुर चला गया।

जब चलपति और दलपति लक्ष्मीपुर पहुँचे

तब गाँव के लोगों ने उन्हें घेर लिया और उनसे जंगल के भूत-प्रेतों के बारे में अनेक सवाल किये। दलपति ने उनसे कहा, "वे भूत-प्रेत बड़े ख़तरनाक हैं। मैं इसके बाद उस जंगल से होते हुए नहीं, दूसरे रास्ते से सिरिपुर चला जाऊँगा।"

वेताल ने कहानी सुना चुकने के बाद विक्रमार्क से पूछा, "राजन्, जब से दलपति, जंगल में गजपति और चलपति से मिला, तब से लेकर उसके व्यवहार में कपट ही कपट दीखता है। लगता है कि वह दूसरों को धोखा देने में माहिर है। उसने उन दोनों से कहा कि भूत-प्रेत हैं ही नहीं। पर ग्रामीणों से उसने कहा कि वहाँ बहुत खतरनाक भूत-प्रेत हैं। क्या यह कपट, दग़ाबाजी नहीं है? मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।"

विक्रमार्क ने कहा, "किसी भी व्यक्ति में जन्म से ही अलौकिक शक्तियाँ होती हैं, ऐसा कोई नहीं सोचता। ये सारे के सारे विश्वास उनके माता-पिताओं, पडोसियों की बातों से पैदा होते हैं। लगता है कि दलपति पर ऐसी बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वह ऐसे विश्वासों से परे है। चलपति को विश्वास था कि जंगल में भूत-प्रेत हैं, इसीलिए हरे रंग की साडी में युवती को देखते ही वह बेहोश हो गया। पर गजपति से जब युवती ने कहा कि मैं भूतनी हूँ, तो वह होश खो बैठा। परंतु दलपति ऐसे विश्वासों के दूर था, इसलिए उसने उसे साधारण युवती ही समझा। उसी अनुरूप उसका व्यवहार भी रहा। गांववालों से उसने कहा अवश्य कि उस जंगल के भूत-प्रेत बहुत ख़तरनाक हैं। इसके पीछे एक कारण था । उसको इस बात पर विश्वास था कि अवंती राज परिवार के सदस्य वहाँ रहकर अज्ञात जीवन बिता रहे हैं। वह नहीं चाहता था कि यह राज़ खुले और वे कहीं ख़तरे में फंस जाएँ । उसकी इस सोच के पीछे एक अच्छा उद्देश्य है। अतः यह समझना ग़लत है कि दलपति कपटी व धोखेबाज है। यह समझना भी ग़लत है कि वह वाक् चतुर है।"

राजा के मौन भंग में सफल वेताल शव सहित ग़ायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा।

(तुलसी की रचना)

जब देवता नाचते हैं

मणिपुरी की एक पौराणिक कथा के अनुसार, देवगण अपने अन्य कर्त्तव्यों से अवकाश लेकर आमोद-प्रमोद मनाते हैं। मणिपुरी वासी १५ दिनों तक इस उत्सव को मनाते हैं। लाई हरोबा (लाई-देवगण, हरोबा-आमोद प्रमोद) अप्रैल-मई में मनाया जाता है। भगवान् शिव ने एक बड़ी झील देखी और उसपर अपने त्रिशूल का लक्ष्य साधा। झील सूख गई। भगवान ने सात देवताओं और सात देवियों को स्वर्ग से मिट्टी लाकर वहाँ पर छिड़क देने के लिए कहा। जैसे ही यह काम खत्म हुआ, उन सब ने नाचना शुरू किया और वे सात रात और सात दिन तक नाचते रहे।

सांपों के देवता नागदेव ने अपने मणि से उस स्थान को आलोक से भर दिया। इसीलिए उस स्थान का नाम मणिपुर पड़ा।

प्रथम मुस्लिम निर्माण

दिल्ली में एक मस्जिद है जिसे फारसी में "कुवैत उल इस्लाम" कहते हैं। यह कुतुब मीनार के निकट है और कहा जाता है कि यह भारत में प्रथम मुस्लिम निर्माण है। इसे दिल्ली के वाइसराय कुतुबुद्दीन ने पृथ्वीराज से जीतने के बाद बनाया था। राय पिथोरा क़िला को तोड़कर उसके नक्काशीदार खम्भों और सोहावट्टियों को इस मस्जिद में लगाया गया था। यह एक नई वास्तु शैली का आरम्भ था, जिसे इण्डोमुस्लिम वास्तुकला कहते हैं।

अन्य देशों (जावा) की अनुश्रुत कथाएँ

आसमान से टपका भाग्य

सदियों पहले जावा में अनेक राज्य थे जो अब हिन्देशिया का एक टापू है। उनमें से एक राज्य का राजचिह्न मुर्गा था। उसके पीछे निम्नलिखित कहानी है।

राजकुमार का, जो राजा का इकलौता पुत्र था, एक विचित्र शौक था। उसे मुर्गे की लड़ाई बेहद पसन्द थी। उसके मित्र जहाँ-तहाँ से मोटे मुर्गे पकड़ लाते और उन्हें लड़ाई के लिए प्रशिक्षित करते थे। फिर यदा कदा महल के पीछे खुले मैदान में खेल का आनन्द लेते थे।

उस राज्य के लोग, उन सुस्त छोकरों के मजे के लिए अपने मुर्गों के खोते रहने के कारण नाराज़ रहते थे, लेकिन राजा को शिकायत करने का साहस किसके पास था? आखिरकार उनका भावी राजा, इन सबके पीछे था! लेकिन एक दिन राजा जब अपने राज्य में बहुरूपिया बनकर घूम रहा था तब उसने देखा कि उसके बेटे के कुछ दोस्त एक किसान का मुर्गा बलपूर्वक ले जा रहे हैं और गर्व से घोषणा कर रहे हैं कि यह सब राजकुमार के कहने पर हो रहा है। राजा ने अपमानित महसूस किया। गाँववालों से बात करने पर यह पता चला कि बहुत दिनों से लगातार उन्हें यह मुसीबत झेलनी पड़ रही है।

महल में लौटने के बाद राजा ने सबसे पहले यह आदेश दिया कि राजकुमार तुरन्त राज्य से बाहर चला जाये। राजा हर बात में इतना सख्त

था कि किसी में, किसी बात पर पुनर्विचार करने के लिए अनुरोध करने का साहस नहीं होता था। राजकुमार को महल छोड़कर जाना ही पड़ा। राजा के गुप्तचरों ने उसका पीछा किया और राजकुमार के राज्य से बाहर जंगल में प्रवेश करने के बाद वे लौट आये।

संध्या हो चुकी थी। शीघ्र ही जंगल अन्धकार से ढक गया। यद्यपि वह एक साहसी युवक था फिर भी जंगली जानवरों की चिल्लाहटों से वह घबराने लगा।

सौभाग्यवश उसे एक झोंपड़ी से एक टिमटिमाती रोशनी दिखाई पड़ी। उसने उसका दरवाजा खटखटाया। एक युवती ने दरवाजा खोल कर उसे सिर से पाँव तक सन्दिग्ध दृष्टि से देखा। राजकुमार ने अपने दुर्भाग्य के बारे में उसे सब कुछ बता दिया, लेकिन यह रहस्य उद्घाटित नहीं किया कि वह उस देश का राजकुमार है। युवती ने उस पर दया कर उसे शरण दे दी। युवती के माता-पिता जंगल में रहते थे और वैद्यों को जड़ी-बूटियाँ बेचकर जीवन-निर्वाह करते थे। एक बार पास की नदी पार करते समय नाव उलटने से उनकी मृत्यु हो गई। माता-पिता की मृत्यु के बाद युवती ने माता- पिता के व्यापार को जारी रखा।

राजकुमार उसके साथ ठहर गया और उससे विवाह कर लिया। वह बहादुर और बुद्धिमान था। वह अपनी पत्नी के साथ जड़ी-बूटियाँ एकत्र करने के अतिरिक्त हिरण और चिड़ियों को पकड़ कर लकड़हारों को बेचता था।

दिन गुजरते गये। एक दिन लकड़हारों से उसे समाचार मिला कि उसके पिता यानी राजा की मृत्यु हो गई है। ''सुनो प्रिये'', उसने पत्नी से कहा, ''मैं कुछ दिनों के लिए शहर जाऊँगा और शीघ्र ही लौट आऊँगा। हो सकता है जल्दी ही हमलोगों का भाग्य पलट जाये।''

''जल्दी ही आना, क्योंकि तुम्हें मालूम है कि क्या होने जा रहा है...'' उसकी पत्नी ने धीमे स्वर में कहा। उसके कहने का तात्पर्य था कि वह माँ बननेवाली है।

राजकुमार मुस्कुराता हुआ चला गया। उसके शहर में पहुँचते ही लोगों में खुशियों की लहर फैल गई। वह राजा का एक मात्र उत्तराधिकारी था। राजा ने अपने बेटे को देशनिकाला देने के बाद

किसी उत्तराधिकारी की घोषणा नहीं की थी। इसलिए तुरन्त अनेक अनुष्ठानों के बीच राजकुमार का राज्याभिषेक कर दिया गया।

इसी बीच जंगल में अचानक बाढ़ ने तबाही मचा दी। राजकुमार की पत्नी को जंगल के दूरस्थ भाग में एक गुफा में शरण लेनी पड़ी। बच्चे को जन्म देते समय पास रहनेवाले कुछ दयालु लकड़हारों ने उसकी देखभाल की।

इधर अपनी पत्नी को सर्वाधिक आनन्ददायक व सुखद आश्चर्य देने को उतावला नया राजा निराश हो गया। उसकी झोंपड़ी का कहीं नामोनिशान न था।

एक दिन जब राजकुमार की पत्नी गुफा के सामने अपने शिशु के साथ बैठी थी, तब एक छोटा-सा चिंगना ऊपर उड़ते हुए एक विशाल पक्षी की चोंच से गिर पड़ा। स्त्री ने उसे उठाकर उसकी सेवा की। बेटे के साथ-साथ वह भी बड़ा हुआ। उसे देख कर सब चकित थे, क्योंकि किसी ने वैसे मज़बूत मुर्गे को कभी न देखा था और न कहानियों में भी पढ़ा-सुना था।

इसी बीच नये राजा ने मुर्गे की लड़ाई फिर आरम्भ कर दी। निस्सन्देह अब वह बिना किसी के मुर्गे की चोरी किये, ठीक तरीके से, बल्कि विजयी मुर्गे के मालिक को पुरस्कार देकर करने लगा। राजकुमार का बेटा कलरास ने, जो अब बारह वर्ष का था, राजा के शौक के बारे में सुना। अपनी माँ की अनुमति लेकर वह अपने मुर्गे के साथ महल में गया जहाँ खेल चल रहा था। उस दिन स्वयं राजा द्वारा प्रशिक्षित मुर्गों के साथ महत्वाकांक्षी मालिकों के मुर्गों की लड़ाई थी। राजा के मुर्गों ने सब मुर्गों को मात कर दिया।

"महाराज, यदि मेरा मुर्गा आप के मुर्गों को मात कर दे तो आप मुझे क्या देंगे?'' कलरास ने टोकरी में रखे अपने मुर्गे को दिखाये बिना राजा से पूछा। राजा ने उस सुन्दर बालक को देख कर एक अकारण आकर्षण का अनुभव किया। "लेकिन यदि हमारा मुर्गा तुम्हारे मुर्गे को हरा दे तब क्या होगा?'' राजा ने पूछा,जो पूरी तरह आश्वस्त था कि उसी के मुर्गों की जीत होगी।

"मैं तो गरीब हूँ। मैं यहाँ अपने मुर्गे के माध्यम से इनाम जीतने की आशा से आया हूँ। मैं आप को भला क्या दे सकता हूँ? बेशक, मैं आप की

THE ADVENTURES OF
G-man
एंड्रोमेनिया
कहानी १ भाग २
प्रस्तुतकर्ता
Parle-G
POWER SUPPLY
Visit: www.parleproducts.com

अब तक की कहानीः जब जी-मैन को पता चलता है कि टैरोलीन पूरे ग्रह का विनाश करनेवाला है तो बिना एक पल गवाए वो उसके अड्डे में घुस जाता है। वहां टैरोलीन उसी का इंतज़ार कर रहा था ताकि वो उसके दांत खट्टे कर सके।
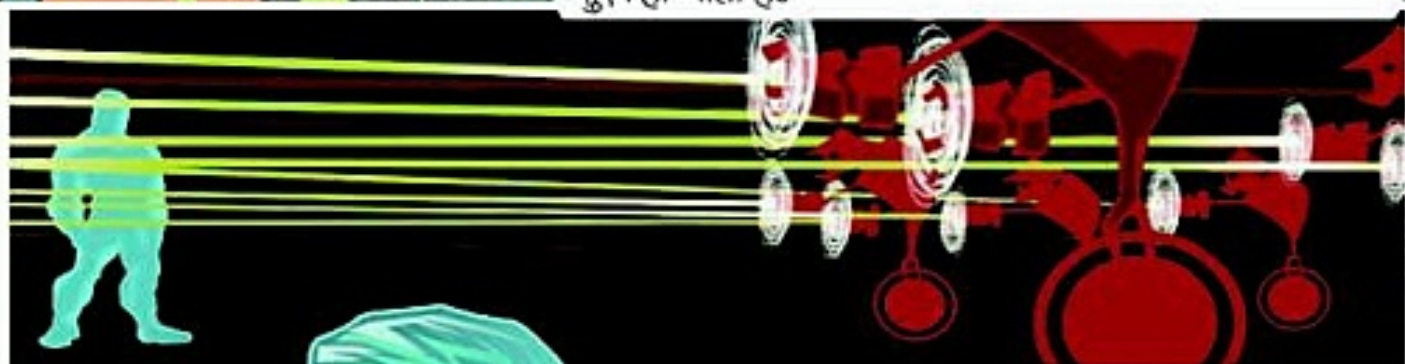
जी-मैन अपनी जी-शिल्ड की शक्ति को बढ़ाता है।
G-man
के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com

जी-मैन जितने एंड्रॉइड्स का नाश करता जाता है पीछे-पीछे उतने ही एंड्रॉइड्स और चले आते हैं, पहले के मुक़ाबले ज़्यादा पावर के साथ।
G-man
के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com

जी-मैन को लगता है कि उसके जी-शिल्ड की ताक़त कम होती जा रही है।
बाप रे! इतनी बड़ी सेना का मुक़ाबला करते-करते मैं तो थक कर चूर हो जाऊंगा। ऐसा ही चलता रहा तो मैं ज़्यादा देर टिक नहीं पाऊंगा।
टैरोलीन, जी-मैन के मन की बात पढ़ लेता है...
क्यों जी-मैन, इतने में ही फुस्स हो गए?
गुस्से से जी-मैन पूरी ताक़त के साथ हमला करता है...
G-man के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com

वो सभी रोबोट्स का नाश तो कर देता है, पर ऐसा करने के साथ-साथ जी-शिल्ड की शक्ति भी धीरे-धीरे कम हो जाती है।

अचानक उसे एक आवाज़ सुनाई देती है।

बहुत अच्छे जी-मैन! जबाब नहीं। चलो आराम बहुत हुआ, अब दूसरे राउण्ड के लिए तैयार हो जाओ।

जी-मैन की मुश्किलें और भी बढ़ जाती हैं। अब तो उसे पहले से भी ज़्यादा एडवांस्ड, स्टील के कवच से सुसज्जित रोबोट्स का सामना करना पड़ेगा।

ज़िंदा रहना हैं तो फ़ौरन नौ दो ग्यारह होना पड़ेगा।

जी-मैन किसी तरह बचते-बचाते वहां से निकल जाता है।
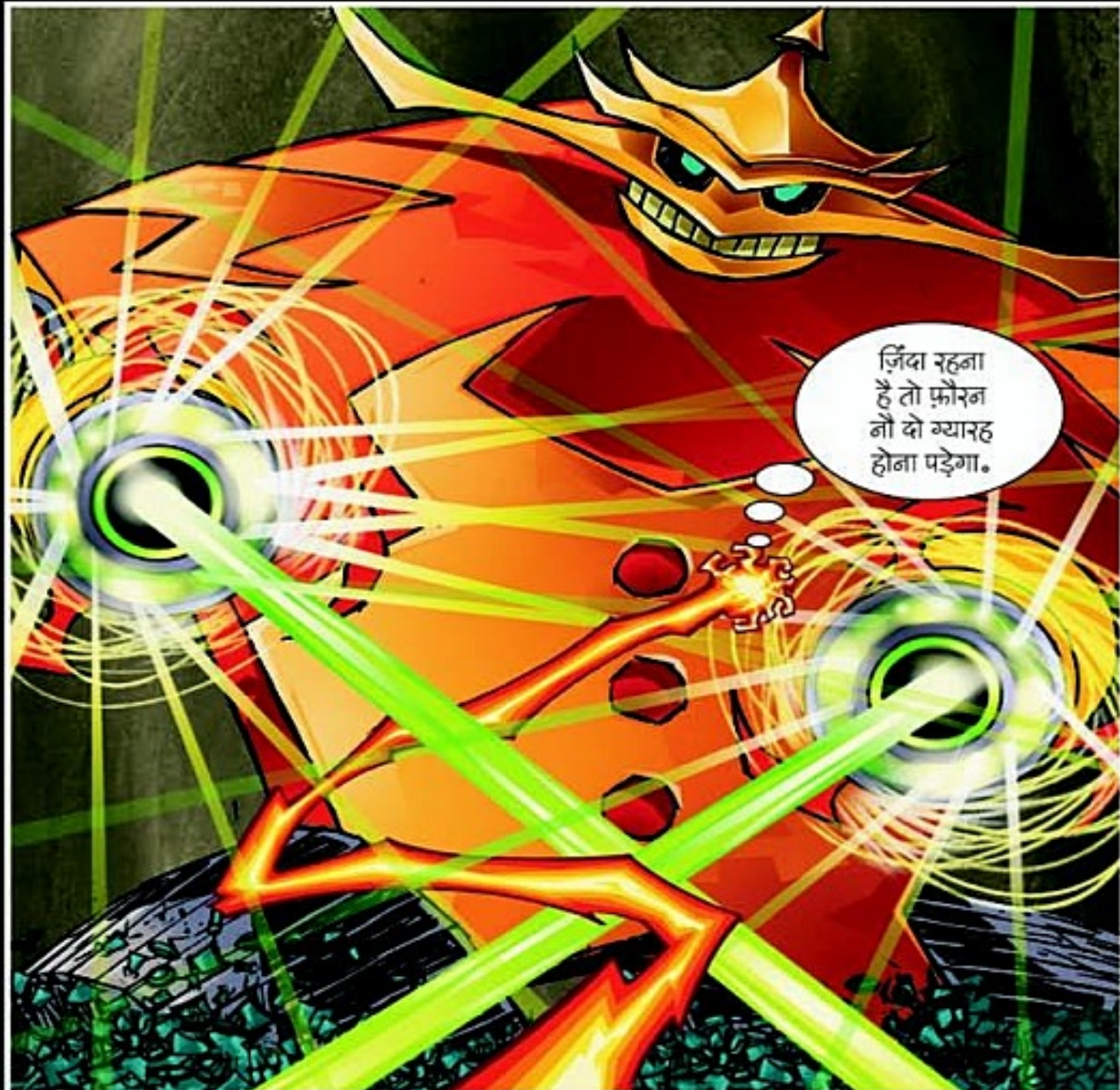
अगले अंक में: क्या होगा जी-मैन का नया प्लान? क्या उसका प्लान कामयाब होगा या एक बार फिर टैरोलीन के एंड्रॉइड्स से बचकर उसे भागना होगा? जी-मैन के रोमांचक कारनामों के लिए पढ़िए एंड्रोमेनिया का अगला अंक।
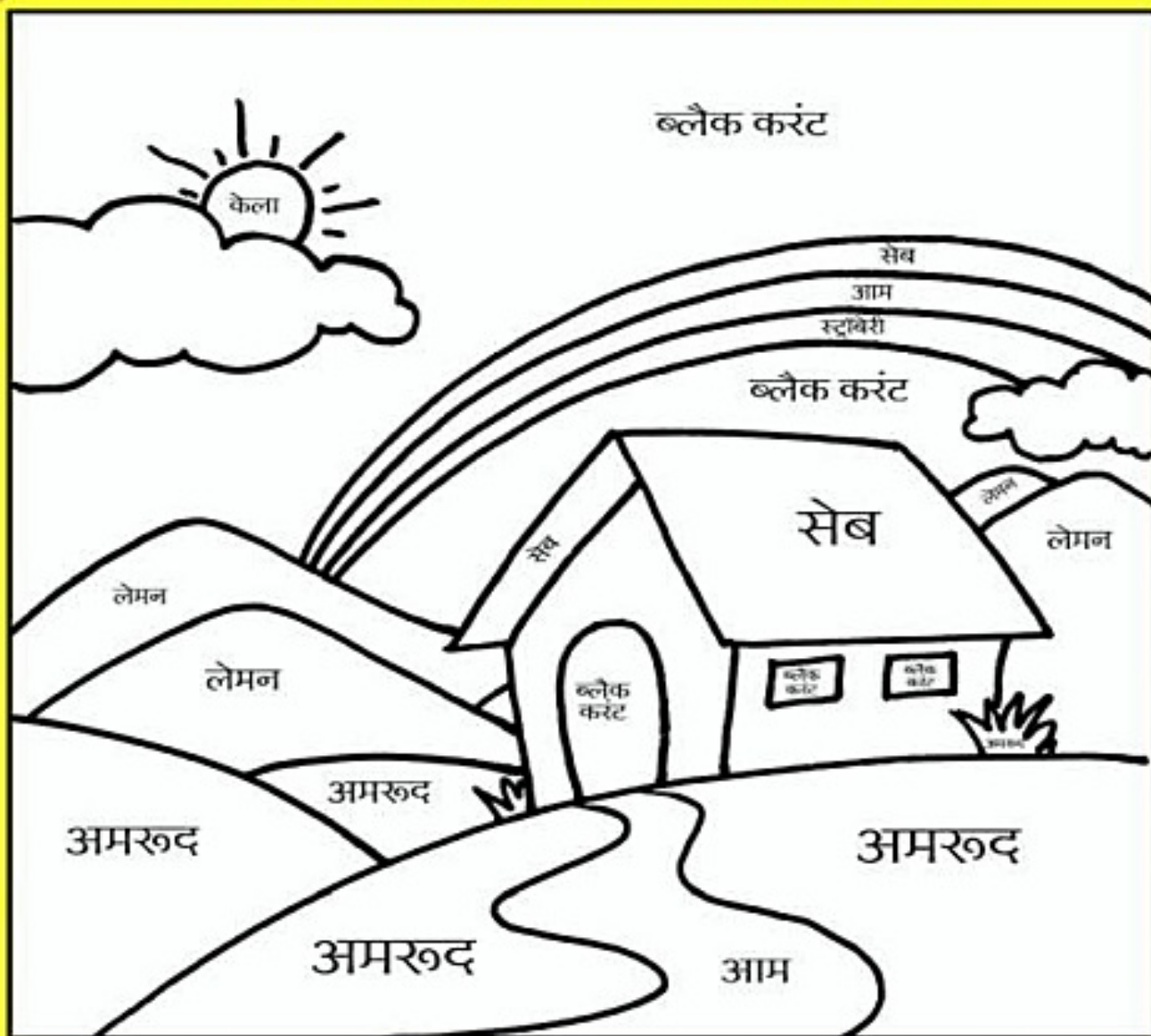
1. पानी का राक्षस
2. टैरोलीन का हेड क्वार्टर
3. दुष्टों का विनाशक
4. जी-मैन का पावर सप्लाय
5. जी-मैन का साथी
6. अंधेरों का बादशाह

सेवा में रह सकता हूँ।'' कलरास ने कहा। फिर उसने मुर्गे को निकाला।

''अरे वाह! यह तो विशाल मुर्गा है!'' दरबारियों ने आह भरते हुए कहा। मुर्गों की लड़ाई शुरू हुई। कलरास के मुर्गे ने राजा के सर्वश्रेष्ठ मुर्गे को मात दे दी। राजा ने कलरास को सौ सिक्कों से पुरस्कृत किया। क्रमश: कलरास का बलवान मुर्गा राजा के सभी मुर्गों को हराता चला गया और उसे ढेर सारा इनाम दिया गया।

''लड़के, क्या अपना मुर्गा मुझे बेचना चाहोगे?'' राजा ने पूछा।

''ओह नहीं, उसे कैसे बेच सकता हूँ! यह मेरा दोस्त है। मेरे जन्म के तुरन्त बाद ही यह आसमान से आया और मेरे साथ बढ़ा-पला। अब मेरी माँ और हम इस मुर्गे की कमाई से एक अच्छी जिन्दगी बसर कर सकते हैं।'' कलरास ने कहा।

''तुम्हारा जन्म कब हुआ?'' राजा ने पूछा।

''बारह वर्ष पहले, जंगल में, जब बहुत बड़ी बाढ़ से तबाही आ गई थी, उसके बाद। मेरी माँ ने दूर की एक गुफा में जाकर शरण ली थी, क्योंकि मेरे पिता अचानक किसी अज्ञात कारण से कहीं बाहर चले गये थे।'' कलरास ने उत्तर दिया।

राजा उसके बारे में जानने के लिए और उत्सुक हो गया। ''मेरे बच्चे, यदि तुम अपना मुर्गा बेचना नहीं चाहते तो, कम से कम, इसके साथ महल में रहना पसन्द करोगे?'' राजा ने पूछा।

''यह तो, महाराज, मेरी माँ के ऊपर निर्भर करता है'', लड़के ने कहा।

राजा अचानक खड़ा हो गया। ''क्या तुम मेहरबानी करके अपनी माँ के पास ले चलोगे?'' यह कहते समय उसका गला भर आया। लड़का अपना-सा लगने लगा।

राजा अपने संगी-साथियों के साथ कलरास के पीछे-पीछे चल पड़ा। जंगलवासियों के लिए कलरास की गुफा के निकट राजा का आगमन एक नया अनुभव था। कलरास की माँ के आश्चर्य की कल्पना करो जब उसने अपने बेटे को राजा के घोड़े पर बैठे हुए देखा।

लेकिन क्या उसे राजा को पहचानने में देर लगी? निस्सन्देह नहीं! उसी क्षण कलरास को युवराजा और उसकी माँ को रानी घोषित किया गया। तब जुलूस महल की ओर चल पड़ा। कोई आश्चर्य नहीं, यदि पिता के सिंहासन का उत्तराधिकारी बनने के बाद कलरास ने मुर्गे को अपने राज्य का प्रतीक बना दिया हो। *(एम.डी.)*

समाचार झलक

बाल अभियानी

कारखानों, होटलों यहाँ तक कि घरों में भी बच्चों से काम करवाने के विरोध में प्रायः आवाज़ें सुनी जाती हैं। केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों ने बालश्रम पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए अनेक कदम उठाये हैं। जो भी हो, बर्तमान स्थिति के अनुसार यह दुराचार अभी निर्मूल नहीं हुआ है। त्रिबेन्द्रम के निकट अट्टिंगल के एक आबासीय स्कूल के एक दस बर्षीय चतुर्थ श्रेणी के छात्र माइकेल एस.कुमार ने बालश्रम के उन्मूलन की आवश्यकता के प्रति जागरुकता फैलाते हुए केरल की राजधानी से राज्य के उत्तर में स्थित कासरगोड तक साइकिल से यात्रा की। उसने अपनी साइकिल यात्रा बाल दिवस के दिन आरम्भ की और पन्द्रह दिनों के बाद अपना अभियान समाप्त किया। मार्ग में लोगों से बातचीत करने के अतिरिक्त वह गाता था, नाचता था और अपनी रचनाओं का अभिनय करता था। उसे इस एकल यात्रा की प्रेरणा तब मिली जब उसने देखा कि कैसे एक छोटे बच्चे को एक हाथी की देखभाल करने के लिए बाध्य किया गया।

लोकप्रिय नाम

अमरीका में भारतीय माता-पिता लड़का शिशु के लिए 'आदित्या' नाम पर झपट पड़ते हैं और यदि शिशु लड़की है तब उनकी पसन्द का नाम 'श्रेया' होता है। सामाजिक सुरक्षा बिभाग द्वारा भेजी गई रिपोर्ट के अनुसार सन् २००३ में २५४ लड़कों का नाम आदित्या और ३११ लड़कियों का नाम श्रेया रखा गया। दूसरा लोकप्रिय नाम लड़कों के लिए अमिय और लड़कियों के लिए आशा था। भारतीय प्रबासियों में एक अन्य प्रिय नाम अर्जुन है।

पाठकों के लिए कहानी प्रतियोगिता

सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टि के लिए २५० रु.

निम्नलिखित कहानी को पढ़ोः

जगवीरा पर्मा गाँव का ज़मीन्दार था। वह बहुत धनी था और प्रचुर सम्पत्ति का मालिक था। फिर भी वह कंजूस था। वह धर्मनिष्ठ बनने का दिखावा करता था और मन्दिर की सुबह और शाम की पूजा में शामिल होना कभी नहीं भूलता था। लेकिन आरती की थाली में वह अन्य भक्तों की तरह पैसे कभी नहीं डालता था। पुजारी ने लेकिन इसका बुरा नहीं माना।

शिवरात्रि के दिन संध्या समय विशेष रूप से पूजा का आयोजन था। आरती के समय जगवीरा सबसे पहली पंक्ति में था। हमेशा की तरह पुजारी आरती की थाली ज़मीन्दार के पास ले गया। ज़मीन्दार ने उसमें दस पैसे का एक सिक्का डाल दिया। पुजारी को यह देखकर आश्चर्य हुआ।

"आज आप आरती में दान देनेवाले पहले व्यक्ति हैं, लेकिन क्या आपको ऐसा नहीं लगता कि केवल दस पैसे देना अपमान की बात है। दस पैसे का एक और सिक्का दे दें तो कैसा रहेगा?"

- ज़मीन्दार की तुम्हारे विचार से क्या प्रतिक्रिया रही होगी?
- क्या उसे यह देखने के लिए प्रतीक्षा करनी चाहिये थी कि और लोग क्या देते हैं?

अपनी प्रतिक्रिया १००-१५० शब्दों में दो और कहानी का एक उपयुक्त शीर्षक बताओ। अपनी प्रविष्टि के साथ निम्नलिखित कूपन को भर कर एक लिफाफे में भेज दो जिस पर "पढ़ो और प्रतिक्रिया दो" लिखा हो।

अन्तिम तिथि : मई ३१, २००५

नाम --**उम्र**-----------**जन्मतिथि**----------------------

विद्यालय --**कक्षा**-----------

घर का पता--

---**पिनकोड**--------------------

अभिभावक के हस्ताक्षर **प्रतियोगी के हस्ताक्षर**

चन्दामामा इंडिया लिमिटेड

८२, डिफेंस ऑफिसर्स कालोनी, इक्कातुथंगल, चेन्नई - ६०० ०९७.

मधुर प्रतिशोध

रघुलाल मोतिहारी गाँव का एक गरीब किसान था। उसी गाँव में प्यारेलाल नाम का एक धनी महाजन रहता था। उसने अधिकतर गाँववालों को ठग कर बहुत धन कमाया। गाँववाले उसकी छलकपट की चाल से परिचित थे, लेकिन पैसे की तुरन्त ज़रूरत पड़ने पर कोई और मदद करनेवाला नहीं था, इसलिए जानबूझ कर मजबूरी में उसके धोखे के जाल में फँस जाते थे। यहाँ तक कि ऋण लेनेवाला दिन ब दिन गरीब होता चला जाता और ऋणदाता धनी बनता जाता।

प्यारेलाल का तरीका सरल था। वह कोई दस्तावेज नहीं रखता था। ''लिखापढ़ी की ज़रूरत क्या है?'' वह कहता था, ''तुम्हें पैसों की ज़रूरत है और मैं तुम्हें दे देता हूँ। जब तुम्हारे पास पैसे आ जायें तब चुका दो। लेकिन मेरा सूद बिना नागा बराबर देते रहना। सिर्फ़ इतना ही कहता हूँ।'' साल के अन्त में ऋण लेनेवाले को पता लगता था कि वह मूल धन से अधिक पैसा दे चुका है, फिर भी ऋण ज्यों का त्यों बना हुआ है। कर्जदार प्यारेलाल के लेनदेन वाले गणित से बिलकुल अनभिज्ञ रहता था।

रघुलाल किंकर्त्तव्यविमूढ़ था। जब महाजन को देने के लिए उसके पास पैसे नहीं होते, प्यारेलाल रघुलाल के अनाजों के ढेर से अनाज उठा लाता था। दूसरी बार उसके छोटे खेत का एक टुकड़ा हथिया लेता और कभी रघुलाल को अपने रसोईघर के बर्तन देने पड़ जाते। एक बार कई दिनों तक जब रघुलाल पर प्यारेलाल की नजर नहीं पड़ी तब वह उसके घर पहुँच गया। बेचारा गरीब किसान बाहर आकर बोला, ''मेरे शरीर पर अब सिर्फ़ ये चिथड़े रह गये हैं और बदलने के लिए दूसरा वस्त्र नहीं है। बताइये, क्या करूँ?''

प्यारेलाल का उत्तर तैयार था। ''सहायता

के लिए तुम राम के पास क्यों नहीं जाते? उन्होंने मुझपर बड़ी कृपा की है। मैं कुछ दिनों के बाद फिर आऊँगा।'' इतना कहकर वह चला गया।

''मैं राम की खोज करूँगा। यदि उसने प्यारेलाल की मदद की है तब वह अवश्य मेरी मदद करेगा।'' रघुलाल ने अपने को आश्वासन दिया और राम की खोज में चल पड़ा। वह चलता रहा, चलता रहा पर उसे मार्ग में कोई व्यक्ति न मिला जिससे वह राम के बारे में पूछताछ कर सके। तभी उसने एक व्यक्ति को देखा जो पुजारी की तरह लग रहा था। ''क्या कृपया आप बतायेंगे कि दयालु राम से कहाँ भेंट होगी? मैं अपनी तीन रोटियों में से तुम्हें एक रोटी दे दूँगा।'' वह आदमी रोटी को देखे बिना बुदबुदाता चलता बना। कुछ दूर जाने के बाद उसकी नजर एक ऐसे व्यक्ति पर पड़ी जिसके ललाट पर भभूत लगी थी। रघुलाल ने उसे एक रोटी देते हुए पूछा, ''राम किधर मिलेंगे? मुझे विश्वास है कि आप मुझे उनसे मिला देंगे।'' उस व्यक्ति ने तत्काल रोटी ले ली और कहा, ''मुझे दुख है कि मैं राम को नहीं जानता। मैं सिर्फ शिव को जानता हूँ।'' फिर बिना धन्यवाद दिये वह चला गया।

रघुलाल अब थक गया था और उसे भूख लग रही थी। लेकिन इस आशा से कि जो कोई उसे मदद करेगा उसी के साथ मिल कर रोटी खायेगा, वह आगे बढ़ता गया। शीघ्र ही मार्ग में उसे चिथड़ों में लिपटा एक गरीब आदमी मिला और वह भी वैसा ही थका मांदा लग रहा था। रघुलाल ने उससे

कहा, ''मैं राम को खोज रहा हूँ। किसी ने मुझे बताया है कि वह मुझे मदद करेगा।'' फिर उसने रोटियों की गठरी खोली।

''ओह! क्या तुम राम से मिलना चाहते हो? मैं ही राम हूँ। बताओ, मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूँ?'' उस आदमी ने रोटियों पर ललचाई नज़र डालते हुए कहा।

''यह लीजिये एक रोटी,'' रघुलाल ने कहा और दोनों खाने लगे। फिर उसने गरीब आदमी से अपनी राम कहानी सुनाते हुए कहा, ''अब मेरे पास कुछ नहीं बचा, न जमीन, न पैसा, न जीविका का कोई साधन।''

वह गरीब व्यक्ति अब भूखा नहीं लग रहा था। उसने अपनी छोटी-सी थैली से एक शंख

छोटे-बच्चे खेत पर जाकर काम किया। एक दिन प्यारे लाल ने उसके हरे भरे लहलहाते खेत को देखा। वह मिठाई लेकर उसके घर गया और बोला, ''रघुलाल, यह देख कर खुशी हुई कि खुशहाली तुम्हारे घर फिर लौट आई है। मैं तुमसे कर्ज मांगने नहीं आया हूँ, बल्कि यह पूछने आया हूँ कि तुम्हारी सफलता का रहस्य क्या है?''

रघुलाल ने, जैसा कि वह सीधा-सादा था, शंख दिखाते हुए कहा, ''इसके लिए मैं इस शंख का ऋणी हूँ।''

प्यारेलाल ने सोचा कि किसान को शंख संयोगवश कहीं से मिल गया होगा। वह लालची तो था ही, उसने किसान को धोखा देना चाहा। जाते समय उसने शंख को अपने शॉल में छिपा लिया। कुछ दिनों तक रघुलाल को शंख के गायब होने की बात मालूम नहीं पड़ी, क्योंकि उसे कुछ दिनों तक पैसों की जरूरत नहीं थी।

घर आकर महाजन ने शंख बजाने की कोशिश की, परन्तु कोई आवाज नहीं आई। कुछ दिनों के बाद महाजन मिठाइयों की थाली के साथ उसके पास जाकर बोला, ''दोस्त, मैं क्षमा मांगने आया हूँ। उस दिन शंख की सुन्दरता पर मैं इतना मुग्ध हो गया कि उसे ठीक से देखने के लिए घर ले गया। मैंने उसे बजाने की कोशिश की लेकिन बजा न पाया। फिर तुमने यह कैसे कहा कि तुम्हारी समृद्धि शंख की देन है?''

रघुलाल इतना मूर्ख था कि उसने शंख लेकर तुरन्त बजा कर दिखा दिया। प्यारेलाल को अपनी

निकाला। ''यदि तुम इसे एक खास तरीके से बजाओ, तब यह शंख तुम्हें मनोवांछित वस्तु देगा। इसे बजाने की शक्ति मुझमें नहीं रही इसलिए मेरे उपयोग का नहीं रहा। इसे रख लो। लेकिन सावधान ! महाजन कहीं तुम्हें फिर बेवकूफ न बना दे !'' इतना कह कर वह चला गया।

रघुलाल घर लौट आया। उसने दरवाजे और खिड़कियाँ बन्द कर लीं और हर तरह से शंख बजाने की कोशिश की। जब उसने एक विशेष प्रकार से उसे बजाया तब उसमें से झनझनाते हुए कुछ सिक्के निकले। वह लालची नहीं था इसलिए उसने शंख बजाना बन्द कर दिया। उसने सोचा कि खाने के लिए उतने सिक्के काफी हैं। उसने पूरा दिन विश्राम किया और अपने

आँखों पर विश्वास नहीं हुआ जब उसने शंख से झनझनाते हुए सिक्कों को गिरते देखा। ''ठीक है, रघुलाल, तुम अब मुझसे लिये हुए कर्ज को भूल जाओ। और इतना ध्यान रखो कि जितना तुम्हें मिलता है, उसका दुगुना मुझे मिल जाये।''

रघुलाल ने बिरोध किया, ''तुमने मुझे बहुत दिनों तक धोखा दिया। मैं तुम्हारे लिए कुछ करूँ, इसके पहले बचन दो कि तुमने मुझसे जितना फालतू पैसा लिया है वह बापस कर दोगे। हमारे खेत का जो हिस्सा तुमने हथिया लिया है वह भी लौटा दो। और हाँ, मेरे बर्तनों को मत भूल जाना। मैंने कई दिनों से रसोई नहीं पकाई है।''

प्यारेलाल को समझ में नहीं आया कि वह क्या करे और क्या न करे। वह विवश हो गया। उसने शंख झपटते हुए कहा, ''फिर तो इसे मेरे पास रहने दो। दोनों में से कोई नहीं फायदा उठायेगा।'' इतना कह कर वह जाने लगा।

रघुलाल ने हार मान ली। ''ठीक है, मैं तुम्हारी बात पर बिश्वास करता हूँ कि अब तुम मुझसे पैसे नहीं मांगोगे। शंख मुझे बापस कर दो। जब भी मैं इसे बजाऊँगा तुम्हें मुझसे दुगुना मिलेगा। लेकिन ध्यान रखो कि मेरे बर्तनों को आज ही लौटा देना और मेरे खेत पर काम करनेबाले अपने मजदूरों को बापस बुला लेना।''

महाजन उदास होकर चला गया। रघुलाल बर्तनों के बापस आने तक इन्तजार करता रहा। दूसरे दिन पैसों की कामना करने के स्थान पर रघुलाल ने शंख बजाते समय मन में यह कामना की कि उसकी एक आँख की दृष्टि चली जाये। वह कुछ दिनों तक इन्तजार करता रहा। महाजन के मजदूरों ने उसके खेत को छोड़ दिया। उसके बाद वह एक दिन प्यारेलाल से मिलने गया।

बेचारा महाजन अपना नाम सुन कर हाथ से टटोलता दरबाजे पर पहुँचा। रघुलाल ने देखा कि प्यारेलाल दोनों आँखों से अन्धा हो गया है! मधुर प्रतिशोध, उसने सोचा।

''रघुलाल, मेरे कुकर्मों के लिए मुझे माफ कर दो।'' प्यारेलाल ने अनुरोध किया। ''कृपया अपने शंख से प्रार्थना करो कि मेरी आँखों की दृष्टि वह बापस कर दे। क्या नहीं करोगे?''

शंख ने उसकी प्रार्थना सुन ली और प्यारेलाल की आँखों की रोशनी फिर बापस आ गई!

दिली दोस्त

प्राचीन काल में जब ब्रह्मदत्त काशी राज्य पर शासन करते थे, उन दिनों बोधिसत्व ने एक ब्राह्मण गृहस्थ के घर जन्म लिया। माता-पिता ने उसका नामकरण सत्यानंद किया। दो-चार साल बाद उस ब्राह्मण के एक और पुत्र हुआ जिसका नाम नित्यानंद रखा गया।

जब दोनों भाई युवावस्था को प्राप्त होने लगे, तब अचानक उनके माता-पिता का स्वर्गवास हो गया। इस पर अपनी ज़िंदगी से विरक्त होकर एक ने गंगाजी के उस पार अपनी कुटी बनाई तो दूसरे ने इस पार अपनी झोंपड़ी बनाई। इस प्रकार वे दोनों सन्यासी का जीवन बिताने लगे।

एक दिन, पाताल लोक का सर्पराज मणिकांत मानव का रूप धरकर पृथ्वी पर आ पहुँचा और गंगाजी के किनारे पैदल चलकर जाने लगा। उस वक़्त नित्यानंद की कुटी पर उसकी नज़र पड़ी। छोटी-सी उम्र में ही सन्यासी का जीवन बितानेवाले नित्यानंद को देख मणिकांत अचरज में आ गया। उसने उसे अपना परिचय दिया और देर तक उसके साथ वार्तालाप किया।

इस प्रकार धीरे-धीरे नित्यानंद और मणिकांत के बीच दोस्ती हो गई। उस दिन से बराबर मणिकांत नित्यानंद की कुटी में आने लगा। वे दोनों घंटों बातें करते अपना समय बिताने लगे। मणिकांत जब-तब अपना वास्तविक रूप धरकर नित्यानंद के सर पर अपना फण फैला देता और उसे ठण्डी छाया देकर अपने लोक को चला जाता था।

इस प्रकार कई साल गुजर गये। एक दिन नित्यानन्द ने सोचा कि मणिकांत उसका मित्र अवश्य है, लेकिन स्वभाव से सर्प दुष्ट प्रकृति के होते हैं। किसी कारण से अगर मणिकांत उस पर नाराज़ हो जाये तो वह उसे डंस सकता है।

इसी विचार को लेकर नित्यानंद का मन एकदम अशांत हो गया। इस हालत में वह एक दिन गंगाजी को पार करके अपने बड़े भाई

सत्यानंद को देखने गया। सत्यानंद अपने छोटे भाई को देख व्याकुल हुआ और पूछा- "मेरे प्यारे छोटे भाई, तुम इस प्रकार क्यों कमज़ोर हो गये हो? आख़िर इसकी वजह क्या है?" इस पर नित्यानंद ने सारी बातें साफ़-साफ़ सत्यानंद को सुनाईं। "भैया, तुम्हारी बातों से मुझे ऐसा मालूम होता है कि तुम सर्पराज मणिकांत को अपना दिली दोस्त मान रहे हो! फिर भी तुम यह सोचकर डरते हो कि कहीं उसके द्वारा तुम्हें कोई हानि न पहुँचे! लेकिन यह बताओ, तुम्हारे पास उसके न आने से क्या तुम खुश रह सकते हो?" सत्यानंद ने पूछा।

नित्यानंद थोड़ी देर तक सोचता रहा, तब बोला, "मुझे ऐसा मालूम होता है कि मणिकांत के मेरे पास न आने पर मेरे मन को शांति मिलेगी। मगर आने से मैं उसे रोक नहीं सकता।"

यह जवाब सुनकर सत्यानंद हँस पड़ा और बोला, "अच्छा, यह बताओ, वह जब तुम्हारे पास आता है, तब वह किस प्रकार के आभूषण धारण किये रहता है?"

"उसके बदन पर आभूषणों की कोई कमी नहीं होती, लेकिन सब से मूल्यवान एक मणि है जो चमकते हुए उसके कण्ठ पर लटकता रहता है!" नित्यानंद ने जवाब दिया।

"भैया, तब तो तुम एक काम करो। इस बार जब सर्पराज तुम्हारे पास आयेंगे, तब तुम उनसे वह क़ीमती रत्न मांग लो।" सत्यानंद ने नित्यानंद को सलाह दी। इस घटना के दो-तीन दिन बाद
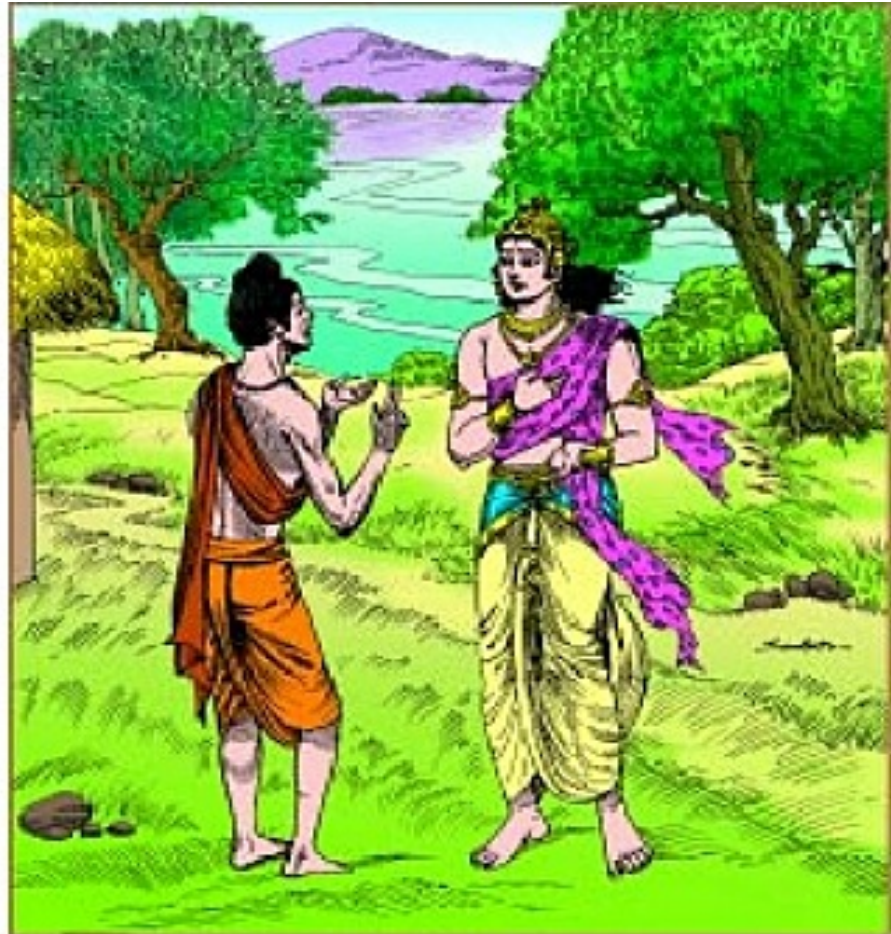
मणिकांत नित्यानंद की कुटी में आया। नित्यानंद ने उससे वह मूल्यवान मणि मांगा। इसपर मणिकांत नाख़ुश होकर नित्यानंद की कुटी में बैठे बिना उसी वक़्त वापस चला गया।

दूसरे दिन मणिकांत जब नित्यानंद की कुटी में आया, तब नित्यानंद दरवाजे पर खड़ा था। उसने झट पूछा, "कल मैंने आप से वह मूल्यवान रत्न मांगा, आपने नहीं दिया, क्यों?"

इसपर मणिकांत कुटी में प्रवेश किये बिना ही द्वार पर से वापस लौट गया।

तीसरे दिन जब मणिकांत नित्यानंद की कुटी के समीप पहुँचा ही था कि नित्यानंद ने आगे बढ़कर कड़कते स्वर में पूछा, "आपसे मैंने इसके पूर्व दो बार वह रत्न मांगा, पर आपने उसे मुझे नहीं दिया। आज देते हैं या नहीं?"

सर्पराज मणिकांत उदास चेहरा बनाकर बोला,

"नित्यानंद, यह मणि असाधारण है! यह मणि वह कामधेनु है जिससे मैं जो भी चीज़ माँगू, दे देता है! यह मेरे लिए कल्पतरु है। ऐसी चीज़ मैं आपको कैसे दे सकता हूँ? इसलिए आज से मैं फिर कभी आपकी कुटी में क़दम न रखूँगा।" यों कहते सर्पराज वापस चला गया।

इसके बाद नित्यानंद ने एक हफ़्ते तक मणिकांत का इंतजार किया, पर वह न आया। इसपर नित्यानंद इस चिंता के मारे दिन ब दिन कमज़ोर होता गया कि मैंने एक रत्न मांगकर अपने एक दिली दोस्त को खो दिया है !

उस हालत में सत्यानंद अपने छोटे भाई को देखने एक दिन नित्यानंद की कुटी में पहुँचा। अपने छोटे भाई को सूखकर कांटा बने देख सत्यानंद व्याकुल हो उठा और बोला, "नित्यानंद, तुम्हारी तबीयत पहले से कहीं ज़्यादा बिगड़ गई है! क्या तुमने मेरे कहे मुताबिक़ किया है? क्या अभी तक सर्पराज से पिंड छूटा नहीं?"

"भैया, आपकी सलाह के मुताबिक़ मैंने सर्पराज से वह मणि मांगा। उस दिन से उन्होंने मेरी कुटी में आना बंद कर दिया है। वह इसके पहले मेरी कुटी में आ जाता, अपना फण फैलाकर मुझे छाया देता। उस वक़्त मुझे जो आनंद मिलता था, मैं उसका बयान नहीं कर सकता। अब मेरा मन एकदम अशांत हो गया है ! इसी चिंता से मैं बिलकुल कमज़ोर हो गया हूँ !" नित्यानंद ने अपने दिल की बात बताई।

इसपर बोधिसत्व बने सत्यानंद ने शांत स्वर में समझाया, "मेरे छोटे भैया, तुम सर्पराज मणिकांत को अपना दिली दोस्त मानकर फूले न समाये, लेकिन ऐसा दिली दोस्त रत्न के मांगने पर अपना मुँह मोड़ कर चला गया है, अब वह तुम्हारा चेहरा तक नहीं देखता। क्या दिली दोस्त का व्यवहार कहीं ऐसा ही होता है? वह तो स्वार्थी है, तुम्हारा सच्चा दोस्त नहीं है ! इसलिए ऐसे दोस्त के यहाँ न आने पर तुम बिलकुल चिंता न करो।"

नित्यानंद ने अपने बड़े भाई की कही हुई बातों की सच्चाई को समझ लिया। इसके बाद उसने कभी सर्पराज की चिंता नहीं की। शीघ्र ही वह पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गया।

विष्णु पुराण

श्रीकृष्ण के महत्व की वृद्धि के साथ उनके शत्रुओं की संख्या भी बढ़ती गई। शिशुपाल और जरासंध के दल में कई दुष्ट राजा शामिल हो गये। पौंड्रक नामक करूश देश का राजा काष्ठ के कृत्रिम हाथ तथा शंख-चक्र बनवाकर अपनी बाहुओं में धारण करके और हाथ में गदा लेकर डींग मारने लगा कि मैं ही विष्णु का अवतार हूँ और कृष्ण अवतार पुरुष नहीं है। शिशुपाल का छोटा भाई शाल्व सौमक नामक विमान में आरूढ़ होकर द्वारका नगर पर उड़ते हुए कृष्ण को युद्ध करने के लिए ललकारने लगा। पूर्वी दिशा में नरकासुर प्रचण्ड रूप में आन्दोलन व अत्याचार करने लगा। दक्षिण में बलि चक्रवर्ती का पुत्र बाणासुर शिवजी के संरक्षण में शोणपुर को अपनी राजधानी बनाकर राक्षसों के राज्य का विस्तार करने लगा।

कालयवन का छोटा भाई कालान्तक था। वह देवताओं की मूर्तियों व शिल्पों को ध्वस्त करने तथा देशों को लूटने लगा और कृष्ण के संहार की कोशिश करने लगा।

वह अनेक देशों पर हमला करते हुए गांधार देश में पहुँचा। वहाँ पर संगमरमर पत्थर में गढ़ी सुंदर मोहिनी मूर्ति को देखकर वह मुग्ध हो गया। उस मूर्ति का निर्माण कृष्ण ने विश्वकर्म द्वारा करवाकर उसके भीतर अपने योग की मायाग्नि को प्रवेश करवा दिया था। यह बात कालान्तक नहीं जानता था।

सालभंजिका की उस प्रतिमा को ले जाकर कालान्तक ने अपने अन्तः पुर में रख लिया। वह सोचने लगा कि उस शिल्प सुन्दरी में यदि कोई प्राण फूंक सके तो क्या ही अच्छा होता।

एक दिन रात को वेणु गान के अनुरूप ताल देने वाली पायल की ध्वनि को सुन कर कालान्तक जाग उठा और उसने देखा कि मूर्ति की जगह एक सुन्दरी नृत्य कर रही है। मोहावेश में आकर कालान्तक ने चट उस की बाहुओं को अपने गले में लपेट लिया। दूसरे ही क्षण वह मूर्ति पुनः पत्थर बन गई। इस पर कालान्तक मूर्ति के बाहु-बन्धन में कसकर जल करके धम्म से नीचे गिर पड़ा। मूर्ति के हाथ टूट गए। साथ ही कालान्तक मर गया। पर यवन राज्य में खंडित हाथों वाली मोहिनी की मूर्ति मात्र रह गई।

इसके बाद कृष्ण ने कालान्तक की सेनाओं को मार भगाया। इसी बीच एक विशाल अग्नि पर्वत फूट पड़ा जिसकी ज्वालाओं में यवन राज्य भस्मीभूत हो गया।

इस प्रकार पश्चिमी दिशा में म्लेच्छ तथा यवनों का विद्रोह तो दब गया, पर पूर्वी दिशा में प्रागज्योतिषपुर के शासक नरकासुर के अत्याचार बढ़ने लगे। उसके अत्याचारों से प्रजा में त्राहि त्राहि मच रही थी।

नरकासुर के अत्याचारों से तंग आकर देवता और मुनियों ने उससे मुक्ति की कृष्ण से प्रार्थना की। कृष्ण ने उन्हें अभय दान दिया और नरकासुर का संहार करने के लिए चल पड़े। उनके साथ सत्यभामा भी निकल पड़ी।

नरकासुर को वर प्राप्त था कि भू देवी के द्वारा घायल होने पर ही उस का संहार संभव है। सत्यभामा भू देवी के अंश से पैदा हुई थी।

श्री कृष्ण ने सत्यभामा के साथ गरुड़ वाहन पर सवार हो प्रागज्योतिषपुर पर आक्रमण पर दिया और असुर सेनाओं का अंत कर डाला।

अन्त में एक मत्त हाथी पर सवार हो नरकासुर ने श्री कृष्ण का सामना किया। युद्ध करके कृष्ण जब विश्राम कर रहे थे, तब सत्यभामा ने नरकासुर के साथ घनघोर युद्ध किया।

सत्यभामा ने अपने धनुष की प्रत्यंचा को कानों तक खींचकर नरकासुर पर लक्ष्य करके बाण छोड़ दिया। वह बाण नरकासुर के वक्षस्थल पर गड़ गया। ''अम्मा!'' कहकर नरकासुर पृथ्वी पर गिर पड़ा। फिर अपना सारा साहस बटोर कर गदा उठाए श्री कृष्ण पर टूट पड़ा। श्री कृष्ण ने चक्रायुध से नरकासुर का सर काट डाला।

नरकासुर के संहार के दिन नरक चतुर्दशी

तथा उसके दूसरे दिन नरक शासन के अंत हो जाने पर दीपावली मनाई जाने लगी। इसके बाद श्री कृष्ण ने नरक के पुत्र भगदत्त का राज्याभिषेक किया और अदिति के कुण्डल लेकर सत्यभामा के साथ द्वारका लौट आए।

एक दिन श्री कृष्ण रुक्मिणी देवी के महल में थे। उस समय नारद ने आकर एक पारिजात पुष्प श्री कृष्ण के हाथ में दिया। कृष्ण ने उस पुष्प को रुक्मिणी के हाथ दे दिया। यह ख़बर मिलते ही सत्यभामा रूठ गई। इसपर कृष्ण ने उसे समझाया- "तुम दुखी मत होओ। पारिजात वृक्ष को ही लाकर तुम्हारे महल में रोप दूँगा।"

अदिति के हाथ कुण्डल सौंपने के बहाने श्री कृष्ण सत्यभामा के साथ गरुड़ पर सवार हो देव लोक में पहुँचे। वहाँ पर अदिति के हाथ कुण्डल सौंप दिए और सत्यभामा के साथ नन्दन वन में विहार करते हुए श्री कृष्ण ने पारिजात वृक्ष को उखाड़ लिया।

उस वक्त इन्द्र ने कृष्ण पर बज्रायुध फेंक दिया। वह गरुड के पंख से जा लगा।गरुड ने एक पर को झटक कर उसे गिरा दिया। इस प्रकार इन्द्र का गर्व भंग हुआ। उन्होंने कहा, "जब तक श्री कृष्ण पृथ्वी पर रहेंगे, तब तक पारिजात वृक्ष भी पृथ्वी पर रहेगा।" सत्यभामा के अंत:पुर का उद्यान पारिजात वृक्ष के फूलों से शोभित हो उठा।

श्री कृष्ण ने पुत्र की प्राप्ति के लिए कैलास पर जाकर तपस्या की और शिवजी का अनुग्रह प्राप्त किया। उस समय शाल्व और पौंड्रक ने द्वारका के निवासियों को खूब सताया। कृष्ण ने वापस आकर उन का वध कर डाला।

दन्तवक्र मृत व्यक्तियों के अन्तिम संस्कार कर रहा था, उसी समय श्री कृष्ण उसके सामने आ गए। इससे क्रोध में आकर वह कृष्ण पर हमला कर बैठा। श्री कृष्ण ने उसका संहार कर दिया। तब 'विजय' का जो अंश उसके भीतर से निकला वह ज्योति के रूप में श्री कृष्ण के भीतर समा गया।

श्री कृष्ण के प्रद्युम्न आदि अनेक पुत्र हुए। प्रद्युम्न के पुत्र अनिरुद्ध को बाणासुर की पुत्री उषा ने सपने में देखा और उस पर मोहित हो गई। उस की सखी चित्रलेखा शांबरी माया के प्रभाव से अनिरुद्ध को उषा के अन्त:पुर में ले आई। उषा ने अनिरुद्ध को अपने पति के रूप में वर लिया।

बाणासुर ने अनिरुद्ध को नागपाश में बन्दी बनाकर कारागार में रख दिया। अपने पोते को छुड़ाने के लिए श्री कृष्ण बाणासुर के साथ युद्ध करने आए।

श्री कृष्ण ने बाणासुर के एक हज़ार हाथों में से केवल दो हाथों को बचाकर बाक़ी सब काट डाले। इस पर बाणासुर शरणागत बन गया और श्री कृष्ण के पोते अनिरुद्ध के साथ अपनी पुत्री उषा का विवाह करके सम्बन्ध स्थापित कर लिया।

इस प्रकार उषा और अनिरुद्ध का विवाह संपन्न हुआ। इससे दक्षिण के असुर तथा उत्तर देश के राजाओं के बीच रिश्ता जुड़ गया और सारे देश में एकता स्थापित हो गई।

खाण्डव वन के दहन के समय श्री कृष्ण और अर्जुन ने उस वन में रहनेवाले राक्षसों के महा शिल्पी मय की रक्षा की थी। इस पर मय ने वचन दिया कि पाण्डवों के लिए वह एक अद्भुत सभा भवन बना कर देगा। अग्निदेव ने श्रीकृष्ण को सुदर्शन चक्र, पाँचजन्य शंख और अर्जुन को गांडीव धनुष, देवदत्त शंख तथा अक्षय तूणीर समर्पित किए।

युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ का शुभारंभ किया। अब जरासंध के संहार का समय निकट आ गया था। श्री कृष्ण, भीम और अर्जुन छद्मवेष में अतिथियों के रूप में एक बार जरासंध के महल में पहुँचे।

श्री कृष्ण ने जरासन्ध को बताया कि भोजन देने के बदले हम में से किसी एक के साथ तुम मल्ल युद्ध करो।

"हे कृष्ण, तुम मुझसे डर कर प्रवर्षण गिरि में भाग गए थे। अर्जुन तो दुर्बल है। अब रही भीमसेन की बात। वही मेरे साथ मल्ल युद्ध करने योग्य है।" जरासन्ध ने कहा।

इस पर भीमसेन और जरासन्ध के बीच भयंकर रूप से मुष्टि युद्ध तथा मल्ल युद्ध हुए। भीमसेन ने जरासन्ध को ख़ूब सताया और अंत में श्री कृष्ण के संकेत के अनुसार उस के शरीर को दो समान भागों में चीर डाला और उन भागों को फिर से जुड़ने से रोकने के लिए उन को अस्त-व्यस्त बना कर छोड़ दिया। इस प्रकार श्री कृष्ण ने भीमसेन के हाथों जरासन्ध का संहार करवाया।

भीष्म के सुझाव पर युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ

के लिए अग्रस्थान और प्रथम तांबूल श्री कृष्ण को दे दिया।

इसपर सभा भवन के बीच खड़े होकर शिशुपाल ने श्री कृष्ण को अग्रस्थान देने में आपत्ति की। उसने तलवार खींचकर पांडवों तथा श्री कृष्ण का अंत करने की चेतावनी दी। उसने श्री कृष्ण पर यह आरोप लगाया कि वह चोर और नीच कुल का है, अतः यज्ञ का फल प्राप्त करने योग्य नहीं है। तब तक शिशुपाल के अपराध सौ से अधिक हो गए थे। श्री कृष्ण ने क्रोध में आकर शिशुपाल का सर सुदर्शन चक्र से काट डाला। इस कारण शिशुपाल के भीतर से 'जय' का अंश ज्योति के रूप में निकल कर श्री कृष्ण के भीतर समाहित हो गया। जय-विजय का तीसरा जन्म समाप्त हुआ। वे अपने शाप से मुक्त होकर विष्णु के द्वारपालों के रूप में पुनः वैकुण्ठ में चले गए।

दुर्योधन पांडवों के लिए मय शिल्पी के द्वारा निर्मित मय सभा भवन को देख आश्चर्यचकित था और कई बार वहाँ की अद्भुत रचना को देख भ्रम में आकर अपमानित भी हुआ था। एक बार वह रत्न खचित कालीन के भ्रम में उस पर क़दम रखकर जल में गिर गया। इसे देख द्रौपदी हँस पड़ी। इस पर दुर्योधन अपमान के भार से व्याकुल हो उठा। इस पर शकुनि ने उसको सांत्वना देकर वचन दिया कि उसे इस अपमान का बदला लेने का अवसर दिलाएगा और पांडव तथा द्रौपदी को भी उसके गुलाम बनाकर छोड़ देगा। पर इस के
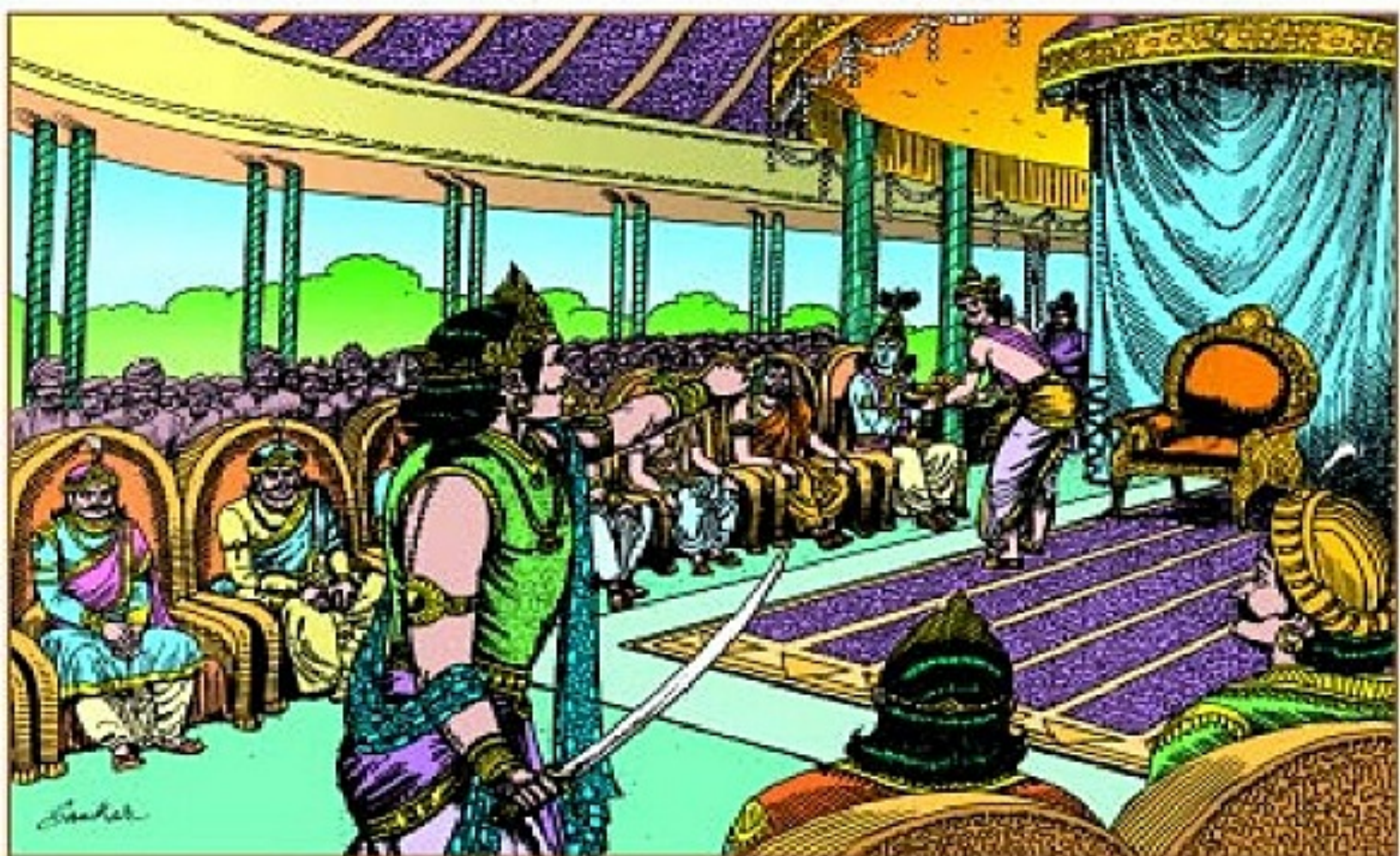
लिए युधिष्ठिर को जुआ खेलने के लिए निमंत्रित करना होगा। सुदामा श्री कृष्ण के बाल सखा थे। श्री कृष्ण और बलराम ने मुनि सांदीप के यहाँ विद्याभ्यास किया था। सुदामा उनके सहपाठी थे।

अधिक संतान तथा दरिद्रता से पीड़ित सुदामा अपनी पत्नी की सलाह पाकर श्री कृष्ण से मिलने के लिए घर से निकल पड़े। उनकी पत्नी ने कृष्ण के लिए कुछ स्वादिष्ठ चिऊड़े बना कर पोटली में उनके हाथ दे दिया।

श्री कृष्ण द्वारकापुरी में अपनी आठ पटरानियों के साथ अपने महल के ऊपरी तल पर झूले पर झूल रहे थे। उस समय दूर से आते हुए सुदामा को देख वे पैदल चल कर उनके स्वागत के लिए आगे आये और अपने बाल सखा के साथ गाढ़ालिंगन किया तथा महल में लाकर अपने सिंहासन पर बिठाया।

श्री कृष्ण की आठों पटरानियों ने सुदामा की अनेक प्रकार से परिचर्या की । श्री कृष्ण द्वारा ऐसा आदर-सत्कार पाकर सुदामा आनन्द से तन्मय हो गये। उसी वक्त कृष्ण ने उन के हाथ की चिऊड़ों की पोटली लेकर उसे खोल दिया और मुट्ठी भर चिऊड़ा लेकर प्रेम से मुँह में डाल लिया। इसके बाद बाकी चिऊड़ा उन की आठों पत्नियों ने बांट कर खा लिया।

सुदामा श्री कृष्ण के द्वारा ऐसा अपूर्व आदर-सत्कार पाकर उस बात को बिल्कुल भूल गया कि वह किस काम से उनके पास आया है। वह बार-बार अपने मन में श्री कृष्ण का स्मरण करते हुए अपने घर की ओर चल पड़ा। पर घर पहुँच कर वह अपने मकान को पहचान नहीं पाया।

सुदामा के छोटे मकान की जगह एक अद्भुत महल खड़ा था। उस महल की दीवारें चांदी व सोने की चमक से दमक रही थीं। उसके स्तम्भ रत्नखचित थे। उसकी पत्नी रत्न-आभूषणों से शोभायमान थी। बच्चे रेशमी वस्त्र धारण करके बसन्तकालीन पुष्पों की भांति प्रसन्नतापूर्वक खेल रहे थे। आठों सिद्धियाँ सर्वत्र व्याप्त थीं।

इस के बाद सुदामा, उसकी पत्नी व बच्चे श्री कृष्ण की कृपा की स्तुति करते हुए भक्तिभाव से अनेक वर्षों तक जीवन-यापन करते रहे।

भारत के अल्पज्ञात स्थल :

भवानी - नदी का द्वीप

भूगोल की कक्षा में हमलोगों ने सीखा है कि द्वीप उस भूस्थल को कहते हैं जो चारों ओर से पानी से घिरा हो। भारत में अंडमान और निकोबार, लक्षाद्वीप तथा मिनिकाय जैसे बंगाल की खाड़ी अथवा अरब सागर में कुछ द्वीप हैं। भारत में इनके अतिरिक्त कुछ ऐसे द्वीप भी हैं जो समुद्र में नहीं, बल्कि नदियों में हैं। ऐसा ही एक द्वीप आन्ध्र प्रदेश में कृष्णा नदी में है। यह द्वीप बिजयवाडा से केवल चार कि.मी.दूर है, जो प्रकाशन बाँध के निकट है। इसके कारण नदी में जल स्तर निरन्तर बना रहता है।

भवानी के रमणीय द्वीप तक बरहम पार्क से हर रोज नाव द्वारा पहुंचा जा सकता है। जैसे ही कृष्णा के शान्त जल पर आरामदेह नाव उतरती है और थोड़ा बेग पकड़ती है, द्वीप की पहली झलक दिखाई पड़ने लगती है। दूर से भी इस तरणशील बैकुण्ठ के नैसर्गिक और निष्कलंक सौन्दर्य की प्रशंसा किये बिना नहीं रहा जा सकता। बच्चों के लिए, मात्र नदी को पार करना एक व्याबहारिक अनुभव है। और जब सचमुच बे द्वीप पर खड़े होते हैं, बे अनुभव करते हैं कि बे प्रकृति माता की गोद में हैं, जहाँ बे भूगोल के बिबिध पक्षों का अध्ययन कर सकते हैं।

कृष्णा और गोदाबरी दोनों नदियों में छोटे-छोटे अनेक द्वीप हैं, लेकिन भवानी उन सबमें बड़ा है जिसमें कहीं-कहीं झिलमिलाते सरोबरों तथा लहराते चरागाहों के साथ इसका बिशाल क्षेत्र जंगलों से भरा है। इन सबके कारण यह स्थल एक - दिबसीय सैर के लिए एक रमणीय सैरगाह बन गया है । इस प्रकार भवानी, पर्याबरण पर्यटन को सुसाध्य बनानेबाला एक अद्वितीय द्वीप है।

अन्यथा एक ब्यापार केन्द्र के चहलपहल से परिपूर्ण बिजयबाडा २७५ कि.मी. दूर आन्ध्रप्रदेश की राजधानी हैदराबाद से स्थल मार्ग द्वारा जा सकते हैं।

समय की सूझ

एक गाँव में भद्रसेन नामक एक नामी ज्योतिषी था। आसपास के सभी गाँववालों ने उससे अपना हाथ दिखाया था। वह किसी का भी हाथ देख उसके मन की बात जान जाता था। साथ ही उसके भूत -भविष्य की बातें भी स्पष्ट बतला देता था।

भद्रसेन का यश दूर तक फैल गया था, इसलिए कोई पेशेवर ज्योतिषी उस गाँव में जाने से डरता था। यदि भूल से कोई ज्योतिषी उस गाँव में आ जाता तो भद्रसेन उसकी परीक्षा लेकर गाँववालों के सामने उसका अपमान करके लौटा देता था।

एक बार उस गाँव में रामशास्त्री नामक एक ज्योतिषी आया जो भद्रसेन के बारे में बिलकुल नहीं जानता था।

भद्रसेन को जब मालूम हुआ तब उसने रामशास्त्री से एक साथ कई सवाल किये - ''हस्तसामुद्रिक शास्त्र के किन-किन भागों का तुमने अध्ययन किया है? असल में तुम किस गाँव के निवासी हो?''

''महाशय, मैं हस्त सामुद्रिक शास्त्र के बारे में बहुत थोड़ी-सी जानकारी रखता हूँ। मैं जो कुछ जानता हूँ, वही बताकर अपना पेट पालता हूँ। जहाँ मेरा पेट भर सके, वही मेरा गाँव है।'' रामशास्त्री ने विनयपूर्वक उत्तर दिया।

रामशास्त्री की विनयशीलता देख भद्रसेन तैश में आ गया और बोला, ''तुम्हारा अधकचरा ज्ञान देख इस गाँव के लोग पैसे दे सकनेवाले पागल नहीं हैं, तुमने शायद मेरे बारे में सुना नहीं होगा। हस्तसामुद्रिक शास्त्र में मैं अपना सानी नहीं रखता। मेरे रहते तुम्हें इस गाँव में कोई पानी तक न देगा। इसलिए तुम किसी और गाँव में चले जाओ, इसी में तुम्हारा भला होगा।''

ये बातें सुनने पर रामशास्त्री को बड़ा क्रोध आया। उसने निश्चय कर लिया कि भद्रसेन का

घमण्ड तोड़ कर ही इस गाँव से बाहर जाना है। उसने शांत स्वर में कहा, ''महाशय, सबका ज्ञान अपनी अलग विशेषता रखता है। मैं डींग नहीं मारता कि मैं आपसे बड़ा विद्वान हूँ। मगर आपने बिना किसी प्रकार के सबूत के मुझे तुच्छ ठहराया। बड़े-छोटे का निर्णय परीक्षा के द्वारा ही संभव है।''

वहाँ पर इकट्ठे हुए लोगों ने कहा, ''रामशास्त्री का कहना सही है। दोनों किसी अजनबी का हाथ देख उसका हाल बता दीजिए, तब मालूम होगा कि किसका कहना सही है।''

वे लोग इस प्रकार बात कर ही रहे थे कि तभी उधर से पड़ोसी गाँव का एक धनी व्यक्ति जा पहुँचा। चौपाल के पास जमा हुए लोगों ने उसको बुलाकर समझाया, ''महाशय, यहाँ पर एक छोटी सी परीक्षा होनेवाली है। आप कृपया इन दोनों ज्योतिषियों को अपना हाथ दिखाके जाइये।''

धनी व्यक्ति ने चौपाल के निकट पहुँच कर अपना हाथ बढ़ाया।

भद्रसेन ने उसके हाथ की रेखाएँ देखकर कहा, ''महाशय, यहाँ तो परीक्षा हो रही है। इसलिए मैं सच्ची बात बता देता हूँ। आप के पास संपत्ति तो काफ़ी पड़ी हुई है, मगर आप कंजूस भी कम नहीं हैं। आप अपनी पत्नी की उंगलियों के इशारे पर चलते हैं।''

धनी आदमी ने क्रोध में आकर पूछा, ''क्या झूठमूठ बककर मेरा अपमान करने के लिए ही मुझे
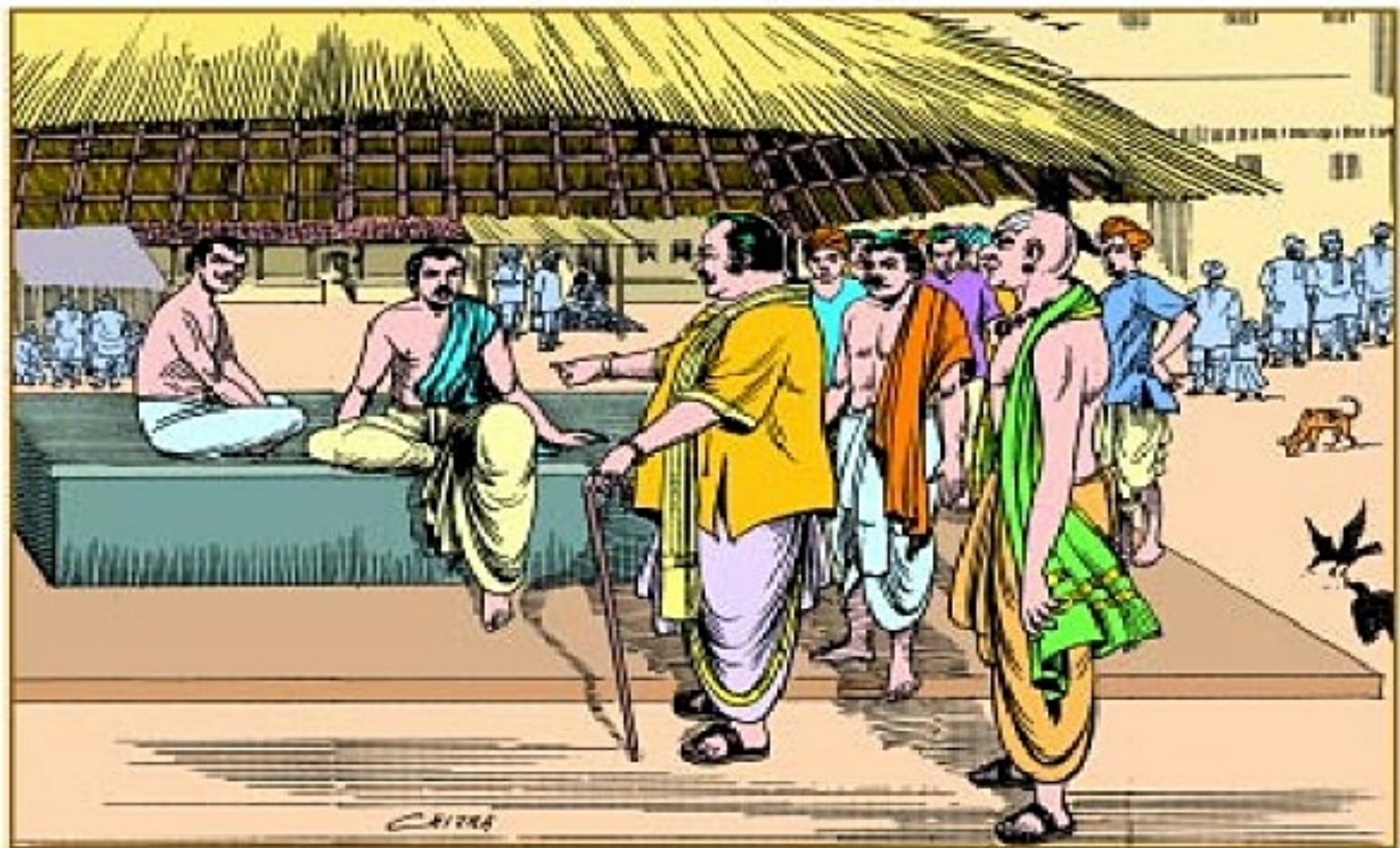
यहाँ पर बुलाया है?'' इस पर रामशास्त्री ने उस अजनबी से कहा, ''महाशय, नाराज़ मत होइयेगा। कुछ लोग यही सोचते हैं कि वे ही ज्योतिष शास्त्र के पूर्ण पंडित हैं। आपका हाथ मुझे भी देख लेने दीजिये। ... यह हाथ तो लक्ष्मी पुत्र का है। इस हाथ की रेखाएँ उदारता को सूचित करती हैं। बड़े से बड़े व्यक्ति भी इनके सामने भीगी बिल्ली बन जाते हैं। इनके पूर्वजन्म के पुण्य के फलस्वरूप इनको बड़ी ही अनुकूलवती पत्नी प्राप्त हो गयी है।''

ये बातें सुनकर धनी व्यक्ति एक दम खुशी में आकर बोला, ''शाबाश! आपने सारी बातें सच्ची सच्ची ऐसे बता दीं, मानों बहुत निकट से मुझे देखा हो।''

इसके बाद रामशास्त्री ने धनी की हथेली को ध्यान के साथ देखकर कहा, ''इस वक़्त आप मेरे शास्त्र ज्ञान पर प्रसन्न हो कर मुझे अपने हाथ की अंगूठी पुरस्कार में देने की सोच रहे हैं।''

यह बात सुनकर धनी व्यक्ति का चेहरा सफ़ेद पड़ गया। इसे भांप कर रामशास्त्री ने पूछा, ''क्या मैंने गलत बात बतायी? आप ऐसे क्यों देख रहे हैं?'' धनी व्यक्ति ने अपने को संभालते हुए कहा, ''ऐसी कोई बात नहीं है। मुझे इस बात का आश्चर्य हो गया कि आपको मेरे मन की बात कैसे मालूम हो गयी?''

ये शब्द कहकर उस धनी व्यक्ति ने अपनी उंगली से क़ीमती अंगूठी निकालकर रामशास्त्री के हाथ में रख दी और अपने रास्ते चलता बना। वहाँ पर उपस्थित लोगों ने अनेक प्रकार से रामशास्त्री की तारीफ़ की और यह स्वीकार किया कि वह परीक्षा में सफल निकला है। ये बातें सुनकर भद्रसेन का सर लज्जा से झुक गया।

तब रामशास्त्री ने उन लोगों से कहा- ''वास्तव में भद्रसेन जी हस्त सामुद्रिक शास्त्र में प्रवीण हैं, परंतु इसी को अपना पेशा बनानेवाले मुझ जैसे व्यक्ति के लिए केवल शास्त्र संबन्धी ज्ञान पर्याप्त नहीं है। साथ ही समय की सूझ भी होनी चाहिये। वास्तविक ज्ञान को न जोड़ा जाये तो व्यर्थ में अहंकार बढ़ जाता है। अहंकार के कारण अपमानित होना पड़ता है।''

शान्तिपुर को हड़पनेवाले पूर्व सेनापति वीर सिंह की, कनकदुर्गा की स्वर्ण प्रतिमा बरामद करने की सभी कोशिशें, नाकामयाब कर दी जाती हैं। नये मन्दिर में उसकी स्थापना को रोकने का वह प्रयास करता है। सरदार सुखदेव की बेटी सुकन्या प्रतिमा की सुरक्षा के लिए वीर सिंह के साथ विवाह करने के उसके प्रस्ताव को स्वीकार कर आत्माहुति देने का निर्णय करती है। जवरसिंह के मार्ग-रक्षण में वह हाथी पर सवार होती है। एक बन्दर जवरसिंह पर आक्रमण करता है। सुकन्या बच निकलती है।

आर्य

अज्ञात राजकुमार का रहस्य

चित्र : गाँधी अय्या

सुखदेव द्वार-मण्डप की ओर जाता है जहाँ वह अपनी बेटी और गोविन्द को देखता है।

ये हमें वापस यहाँ ले आये

मुझे प्रसन्नता है कि तुम सुरक्षित हो, सुकन्या!

तुमने बहुत बड़ा खतरा लिया है।

मुझे आश्रम में लौट जाने की अनुमति दीजिये।

गोविन्द के जाने तक सुकन्या ठहर जाती है।

एक बन्दर ने अचानक सेनापति पर आक्रमण कर दिया।

सुकन्या, तुम्हें आराम की ज़रूरत है।

महाराज, आश्रम से एक शिष्य आया है।

...यह सब तुम मुझे बाद में बता देना।

जैसा आप कहें पिताजी।

जैसे ही वह अपने निवास की ओर जाने के लिए मुड़ती है...

ओह! तुम हो आर्य? अन्दर आओ।

मेरा नमस्कार स्वीकार कीजिये, महानुभाव!

सुकन्या राजकुमार आर्य की उपस्थिति में शर्माती है।
सुकन्या, हमारे सम्मानित अतिथि आये हैं। कुछ फलाहार ले आओ।
जी अच्छा, पिताजी!
मुझे प्रसन्नता है कि यह सुरक्षित आ गई। लेकिन महानुभाव, मैं आपको बताना चाहता हूँ, जबरसिंह बुरी तरह घायल हो गया है।
सुकन्या मुझे बता रही थी कि यह सब कैसे हुआ।
आर्य और सरदार जंगल में हुई घटना के सम्भावित परिणामों पर विचार-विमर्श करते हैं।
आप को सतर्क रहना पड़ेगा।
मुझे आश्चर्य हो रहा है बीर सिंह की दूसरी चाल क्या होगी!
मुझे भय है, वह आपको और आप की बेटी को नहीं छोड़ेगा।
मुझे भी वही भय है, आर्य। वह हम लोगों पर आक्रमण करने का प्रयास कर सकता है।
मैं आप को अत्यधिक सावधान रहने के लिए अनुरोध करूँगा।
मुझे इस स्थान को बहुत सुरक्षित रखना होगा। मेरे सुरक्षा अधिकारी...
तुम स्वयं उन्हें जाकर दो, सुकन्या।
सुकन्या के प्रवेश से उनकी बातचीत रुक जाती है।
पिताजी, मैं राजकुमार के लिए फल और पेय ले आई हूँ।

बाद में आर्य सुखदेव से विदा लेता है।
आर्य , तुम भी अपना ध्यान रखना।
गुरु जी से विचार विमर्श करने के बाद मैं अपनी योजना बताऊँगा।
शान्तिपुर में, वीर सिंह क्रोध से पागल हो रहा है।
शर्म की बात है कि तुमने एक बन्दर से हार मान ली।
लेकिन महानुभाव, जानवर ने पीछे से मुझ पर आक्रमण किया और मुझे राजकुमारी को छोड़ देना पड़ा।
मैं तुम्हारे और अधिक बहाने नहीं सुनना चाहता!
अचानक एक तोता उनके ऊपर मंडराता है और एक कपड़ा गिरा देता है।
एक और सन्देश?
इसे उठाओ।
एक अंगरक्षक कपड़े को उठाकर जबरसिंह को दे देता है।
इसमें क्या लिखा है, पढ़ो।
वीर सिंह! सुकन्या से अपने को अलग रखो आज्ञा से, राजकुमार आर्य
अपने को स्वयं राजकुमार कौन घोषित कर रहा है ?
राजकुमार आर्य! कौन है वह?
किस देश का वह राजकुमार है?
वह उन विद्रोहियों का नेता होगा, जिन्हें हमलोगों ने शान्तिपुर से खदेड़ दिया था। वे लोग उसे राजकुमार कहते होंगे।
उन्हें मुझे हुक्म देने की हिम्मत कैसे हु ई?

वे सब अमृतपुर में हैं। हमें पड़ोसी राज्य पर आक्रमण कर देना चाहिये...
बहुत अच्छा विचार है। इसे अपने राज्य में मिला लेंगे और वहाँ की दौलत लूट लेंगे।
विद्रोही नेता बसन्त मुनि जयानन्द से मिलता है।
मेरा प्रणाम स्वीकार कीजिये, गुरु जी। आर्य कहाँ हैं?
आयुष्मान भव। आर्य अभी आनेवाले हैं।
कनकदुर्गा के नये मन्दिर में एक स्वर्ण प्रतिमा है और इसकी सुरक्षा की देखभाल आर्य करते हैं।
बसन्त आर्य को अभिवादन करता है।
ओह बसन्त? तुम बहुत दिनों से इधर आये नहीं।
गुरु जी कनकदुर्गा के मन्दिर के विषय में बता रहे थे।
अब तुम आर्य की सहायता ले सकते हो।
गुरुजी, हम आर्य से नेतृत्व की अपेक्षा करते हैं।
बसन्त, आर्य को माता कनकदुर्गा का आशीर्वाद प्राप्त है।
हमलोग उनके आदेश पालन के लिए तैयार हैं।
जयानन्द कुछ देर के लिए मौन हो जाते हैं।
मुझे पूर्वाभास हो रहा है कि वीर सिंह चुप नहीं बैठेगा। वह अमृतपुर पर आक्रमण करने की योजना बना सकता है।
लोकसेना अमृतपुर की रक्षा करेगी।
समय आने पर आर्य तुम्हारे साथ सम्मिलित हो जायेगा और रक्षा का नेतृत्त्व करेगा।
और वीरसिंह का शीघ्र ही पतन हो जायेगा।
क्रमशः

कोणार्क का सूर्य मन्दिर

कोणार्क का सूर्य मन्दिर (उड़ीसा) हमारे देश के आश्चर्यों में से एक है। यह पुरी से, ईशान में ५३ मील की दूरी पर है। पुरी से यहाँ सड़क जाती है। भुवनेश्वर से भी यहाँ आया जा सकता है। यह रास्ता केवल चालीस मील ही दूर है।

पुरी के जगन्नाथ जी के मन्दिर को सफेद मन्दिर और सूर्य के मन्दिर को काला मन्दिर कहते हैं।

इस मन्दिर को १२३८-१२६४ ई.के. मध्य प्रथम नरसिंहदेव ने बनवाया था। एक समय में यह मन्दिर बहुत बड़ा रहा होगा क्योंकि यद्यपि सारा मन्दिर खण्डहर हो गया है, पर जो अग्रभाग आज शेष रह गया है, वह भी बहुत विशाल है । दूर से दिखाई देता है।

इस मन्दिर में सिंह और हाथियों की कई आश्चर्यजनक मूर्तियाँ उनके वास्तविक आकार और परिमाण में बनी हुई हैं । विशेषज्ञों का कहना है कि इस प्रकार की मूर्तियाँ व शिला व यथार्थता, किसी भी हिन्दू मन्दिर में नहीं दिखाई देते।

आप के पन्ने आप के पन्ने

तुम्हारे लिए विज्ञान

हैम रेडियो
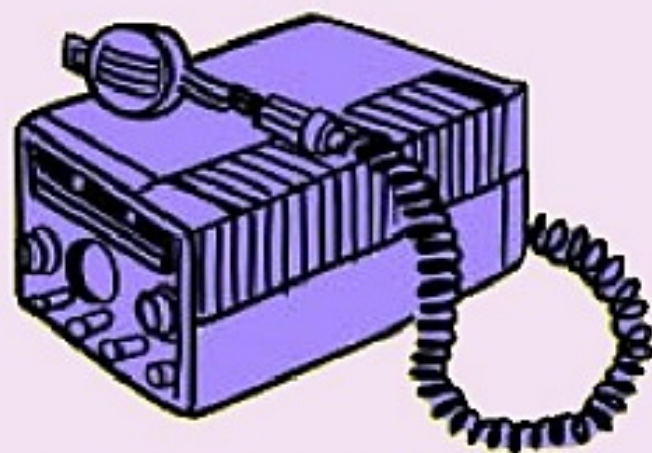
अब तक हमलोग ऐसा कोई यंत्र नहीं बना पाये जिससे प्रकृति पर नियन्त्रण रखा जा सके। इसलिए जब आपदाओं के रूप में प्रकृति का प्रकोप होता है, हमलोग असहाय हो जाते हैं। जब चक्रवात की मार पड़ती है और संचार के सारे साधन छिन्न-भिन्न हो जाते हैं, तब हम क्या करें? एक सरल समाधान है हैम रेडियो अथवा अव्यवसायी रेडियो। हैम रेडियो संसार भर में संकेत भेज सकता है जो अन्य हैम रेडियो द्वारा सुना जा सकता है।

हैम रेडियो, सब एक ही उपकरण में निर्मित रेडियो स्टेशन-सह-रेडियो रिसिवर के समान है। वास्तव में, यह घर से रेडियो स्टेशन चलाने के बराबर है। हैम रेडियो सेट जब काम करने के लिए तैयार हो जाये, तो रेडियो स्टेशन के साथ ट्यून करने के समान उन लोगों को संकेत भेज और वहाँ से प्राप्त कर सकते हैं जो उस समय उसी चैनल पर हैं। यह कम्प्यूटर पर 'ऑन लाइन' बातचीत करने के समान है।

तुम्हारा प्रतिवेश

बड़ी मकड़ी

क्या तुमने कभी मकड़ी-नृत्य के बारे में सुना है? इस नृत्य का उद्भव मध्य युग में हुआ और अब यह इटली के लोक संगीत का एक अंग है। जो भी हो, इस नृत्य का नाम एक बड़ी रोयेंदार भयंकर दीखनेवाली मकड़ी पर पड़ा है। वास्तव में, नृत्य की कुछ प्राथमिक गतियाँ इस जानलेवा मकड़ी द्वारा डंक मारे गये व्यक्ति की दर्दनाक छटपटाहट को प्रतिबिम्बित करती हैं।

दक्षिण यूरोप के मूलनिवासी ये प्राणी बहुत जहरीले माने जाते हैं। इनके काटने से नृत्योन्माद नामक रोग हो जाता है। विष का प्रभाव होते ही रोगी निष्प्राण जैसा सुस्त हो जाता है और उसका तब तक एक मात्र ज्ञात उपचार यही था कि रोगी संगीत पर नाचते-नाचते थककर गिर पड़े।

आज हमलोग जानते हैं कि यद्यपि इस मकड़ी का दंश कीड़ों और छोटे पशुओं के लिए प्राणघातक होता है, लेकिन मनुष्यों के लिए ऐसा नहीं है।

आप के पन्ने आप के पन्ने

क्या तुम जानते थे?

पावरोटी की कहानी–है बड़ी पुरानी

मनुष्य किसी न किसी रूप में पावरोटी नवप्रस्तर युग से खाता आ रहा है। है न आश्चर्य की बात? पहली बार पावरोटी को बनाने के लिए अनाज को पीसकर और उसमें पानी मिला कर लेई बनाई गई और आग पर उसे पकाया गया।

आजकल हमलोग खमीर के साथ पावरोटी बनाते हैं यानी गूँथे हुए आटे में यीस्ट या खमीर मिलाते हैं जो फंफूद पौधे से मिलता है। पहली बार मिस्रवासी लोगों ने खमीर की पावरोटी बनाई। यूनानियों ने उन्हीं से यह ज्ञान सीखा। पावरोटी निर्माताओं की पहली संस्था 'बेकर्स गिल्ड्स' रोम में लगभग १५० वर्ष ईसा पूर्व में बनाई गई। ईसा पूर्व ४००० वर्ष की पावरोटी मिस्र की प्राचीन पिरामिडों में पाई गई है।

ब्रेट फूट में, जो तहिती का मूल वासी वृक्ष है, ताजी पावरोटी के समान ही खुशबू और स्वाद है।

अपने भारत को जानो

इस महीने की प्रश्नोत्तरी में कुछ 'विदेशी' तत्व हैं!

१. गोवा, दमन तथा दीव के अतिरिक्त भारत का कौन-सा भाग पुर्तगालियों के अधीन था?

२. वह एकमात्र कौन-सा केन्द्र-शासित क्षेत्र है जो पूर्वी और पश्चिमी दोनों समुद्र तटों पर है?

३. पणजी किस राज्य की राजधानी है?

४. भारत के किस भाग में मिश्रित भारतीय और अरब वंश के मुसलमानों की आबादी है? वे कैसे पुकारे जाते हैं?

(उत्तर ७० पृष्ठ पर)

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो,
जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

NARAYANAMURTHY TATA

NARAYANAMURTHY TATA

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा, प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२),
डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -६०००९७.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/- रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

बधाइयाँ

विजयी प्रविष्टि

एम.सम्पत कुमारी,
ए-३, स्वास्थ्य विहार,
विकास मार्ग,
नई दिल्ली-११००९२.

ये ध्यान में हैं कैसे मगन!
संगीत से है कैसा लगन!

'अपने भारत को जानो' के उत्तरः

१. दादरा और नागे हवेली   २. माहे (पांडिचेरी)

३. गोवा   ४. लाक्षाद्वीप द्वीपसमूह - मोपलाह

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 26 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor: B. Viswanatha Reddi (Viswam)

अपशिष्ट पदार्थ से सुन्दरता

सोनिया खन्ना के गुलाबों को पुष्प-प्रदर्शन में प्रथम पुरस्कार मिला है। शानदार खिले फूलों को देख कर बीना और उसकी माँ मंत्र-मुग्ध हैं।

''अरे वाह! निश्चित ही तुम्हारी उंगलियों में जादू है, सोनिया'', बीना की माँ थोड़ी ईर्ष्या के साथ उद्‌गार प्रकट करती है। ''कितनी सावधानी के बावजूद मेरे गुलाब तुम्हारे जैसे क्यों नहीं होते?''

''मैं अपना छोटा-सा रहस्य तुम्हें बताती हूँ। मेरे साथ आओ!'' श्रीमती खन्ना कहती है। बीना और उसकी माँ उसके साथ उसके बाग में जाते हैं।

''डहेलिया और लीली कितने मनोहर हैं, अंटी!'' बीना आह भरती हुई तारीफ करती है।

''धन्यवाद तुम्हें बीना! अब डहेलिया के उस गमले को निकट से देखो।'' श्रीमती खन्ना कहती है।

बीना भौंचक रह जाती है। ''प्याज के छिलके....अण्डों के खोल...क्यों, यह सब तो कूड़ा है!''

''हाँ है, लेकिन बहुत उपयोगी कूड़ा करकट'', श्रीमती खन्ना मुस्कुराती हुई कहती है। रसोई घर का जैव-अवक्रमणीय (बायो-डिग्रेडेबल) कूड़ा करकट कम्पोस्ट में डालने से बहुत उत्कृष्ट खाद बन जाता है। उन सभी पदार्थों का, जिन्हें हम प्राय: फेंक देते हैं, आप के पौधों को स्वस्थ और हरा भरा रखने में, बहुत अच्छा उपयोग हो सकता है।'' वह तब प्राकृतिक खाद बनाने की प्रक्रिया समझाती रही।

''यह सचमुच कितना आश्चर्यजनक है! मुझे नहीं पता था कि कूड़ा-करकट भी इतना उपयोगी हो सकता है'', बीना कहती है। उसकी माँ आगे कहती है, ''मैं अभी से ऐसा ही करना शुरू कर दूँगी। धन्यवाद, सोनिया!''

CHANDAMAMA (HINDI) MAY 2005
REGD NO. TN/PMG(CCR)-594/03-05
REGD. WITH REGISTRAR OF NEWSPAPER FOR INDIA NO.1087/57
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT NO.381/03-05 FOREIGN - WPP NO.382/03-05